स्वयं करें

निम्नांकित विषयों पर प्रतिवेदन लिखिए—

1. आपके विद्यालय में खेल-दिवस मनाया गया। उस पर प्रतिवेदन प्रस्तुत कीजिए ।

2. आपकी कॉलोनी में नशामुक्ति अभियान पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। आप उस पर प्रतिवेदन तैयार कीजिए।

3. आपके गाँव में होली मिलन समारोह मनाया गया। आप उस पर प्रतिवेदन प्रस्तुत कीजिए।

4. आपके पार्क में आयोजित खेल टूर्नामेंट में क्रिकेट खिलाड़ी खेल-खेल में एक-दूसरे से भिड़ गए। आप इस घटना का प्रतिवेदन प्रस्तुत कीजिए।

5. आपकी कॉलोनी में देहज-प्रथा के विरूद्ध एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। आप उस पर प्रतिवेदन प्रस्तुत कीजिए।

6. आपके नगर में गाँधी-जयंती बड़े धूम-धाम से मनाई गई। आप उस पर प्रतिवदेन प्रस्तुत कीजिए।

7. आपके विद्यालय में वार्षिकोत्सव धूमधाम से मनाया गया। इस पर प्रतिवेदन प्रस्तुत कीजिए।

उन्हें लोगों में बाँटने के लिए प्रेरित करते हुए, पटाखों से दूर रहने के लिए कहा तथा आस-पास के किसी गरीब बच्चे को उपहार एवं मिष्ठान्न देकर उसके साथ खुशी बाँटने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने बच्चों को पटाखों के शोर एवं धुएँ से उत्पन्न प्रदूषण से अवगत कराते हुए, इससे वृद्धों और रोगियों को होने वाली परेशानी के बारे में बताया। उन्होंने पटाखा रहित दीपावली मनाकर उन्हें भी खुश करने की सलाह दी ताकि उनकी दीपावली भी मंगलमय हो सके। अंत में पुनः दीपावली की शुभकामनाएँ देते हुए इसका समापन किया।

5. उज्जवल आवास समिति में मनाए गए कन्या भ्रूण-हत्या के विरूद्ध जन-जागरूकता कार्यक्रम पर प्रतिवेदन

08 मार्च 2013

आज उज्जवल आवास समिति ने अपनी कॉलोनी हर्ष बिहार में कन्या भ्रूण-हत्या के विरूद्ध जन-जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया। इस अवसर पर कॉलोनी के अधिकांश लोग उपस्थित थे, जिनमें युवावर्ग, बच्चे, पुरूष तथा महिलाओं ने उपस्थिति दर्ज कराई। इस अवसर पर कॉलोनी की महिलाओं ने गीत तथा लघुनाटिका प्रस्तुत की, जिसमें जीवन में नारी की महत्ता पर प्रकाश डाला गया था। समिति के अध्यक्ष ने भावपूर्ण भाषण दिया, जिसमें नारी और पुरूष को जीवन रूपी गाड़ी के दो पहिए बताते हुए लिंगानुपात में समन्वय बनाए रखने पर बल देने को कहा गया। इसमें नारियों के बिना समाज की स्थिति की कल्पना कराते हुए, जीववन में नीरसता एवं नीरबता छाने की बात कही गई। उन्होंने कन्या भ्रूण-हत्या न करवाने की युवाओं से शपथ दिलवाते हुए सामाजिक संतुलन बनाने में योगदान देने को बात कही।

अंत में उपस्थिति व्यक्तियों को धन्यवाद देते हुए कार्यक्रम का समापन किया गया।

आयोजन 5.00 बजे किया गया। इसकी सूचना छात्रों को प्रार्थना-स्थल पर दे दी गई थी। इसमें छात्रों को भूकंप से बचाव संबंधी जानकारी एवं बचाव के उपायों को बताया गया। नियत समय पर जैसे ही हूटर बजाया गया, छात्र अपने-अपने बस्ते सिर पर रखे खुले मैदान की ओर भागने लगे। दो मिनट का भी समय न बीता होगा कि प्रार्थना-स्थल के खुले मैदान पर बच्चे पंक्तिबद्ध खड़े हो गए। विद्यालय के पी.टी.आई ने इतने कम समय में वहाँ अचानक सुरक्षित एकत्र होने के लिए बच्चों के प्रयास की प्रशंसा की। उन्होंने एक मेज के माध्यम से इस आपदा से बचाव का मॉक ड्रिल करवाया तथा ऐसी प्राकृतिक आपदा के समय भगदड़ न मचाने, अफवाहें न फैलाने तथा अफवाहों पर विश्वास न करने की सीख दी। उन्होंने ऐसी घटनाओं में घायलों को तुरंत अस्पताल पहुँचाने के उपाय भी बताए। इस समय बच्चों का उत्साह देखते ही बनता था। अंत में सभी को धन्यवाद देते हुए इस मॉक ड्रिल का समापन किया गया।

3. कॉलोनी के पार्क में आयोजित वृक्ष बचाओ समारोह पर प्रतिवेदन

03 अप्रैल 2013

आज संगम पार्क राणा प्रताप बाग कॉलोनी के मुख्य पार्क में आर. डब्ल्यू. ए. के सदस्यों द्वारा सूखते पेड़ों को बचाने के लिए समारोह आयोजित किया गया। इसमें कॉलोनी के गणमान्य सदस्यों को भी आमंत्रित किया गया। समारोह में युवा तथा बच्चों भी सोल्लास शामिल हुए। आर. डब्ल्यू. ए. के अध्यक्ष ने गत जुलाई में लगाए गए पौधे के सूखने पर चिंता प्रकट करते हुए उपस्थित लोगों का ध्यान आकृष्ट कराया। उन्होंने बच्चों तथा युवाओं से इन सूखते पौधों को बचाने का आह्वान किया। उन्होंने वृक्षों को धरती का श्रृंगार बताते हुए इनकी महत्ता पर प्रकाश डाला। उन्होंने उपस्थित व्यक्तियों से दो-दो पौधे तथा नववृक्षों को गोद लेकर उन्हें बचाने का अनुरोध किया। उन्होंने व्यर्थ बह रहे पानी को पार्क की ओर मोड़ने तथा पौधों की सिंचाई करने की बात सुझाई, जिसे सभी ने एक मत से स्वीकार कर लिया। उन्होंने लोगों से इस 'वृक्ष बचाओं समारोह' को सफल बनाने का अनुरोध किया, जिससे सभी को शुद्ध पर्यारण मिल सके। लोगों के पेड़ बचाने की वचनबद्धता के साथ कार्यक्रम का समापन किया था।

4.विद्यालय में दीपावली की पूर्व संध्या पर आयोजित शुभकामना एवं संदेश संबंधी कार्यक्रम पर प्रतिवेदन

दिनांक .....

आज अर्वाचीन सीनियर सेकेंड्री स्कूल रोहिणी, दिल्ली में दीपावली की पूर्व संध्या पर एक लघु कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें बच्चों तथा विद्यालय परिवार के सभी सदस्यों को दीपावली को सादगीपूर्वक मनाने के लिए कहते हुए शुभकामनाएँ दी गई। विद्यालय की प्राचार्या ने बच्चों को पटाखों के बिना दीपावली मनाने की सलाह दी। उन्होंने अपने संक्षिप्त भाषण में विद्यार्थियों को इस पावन पर्व की खुशियाँ बढ़ाने तथा

बहुत से प्रबंध किए गए है। मानवतापूर्ण व्यवहार के लिए निंरतर घोषणाएं होती रहती हैं। यह राष्ट्रीय संपत्ति सचमुच में अपनी संपत्ति प्रतीत होती हैं। इसके सौन्दर्य को बनाए रखने के लिए यात्रियों के लिए निर्देश प्रसारित किए जाते हैं। इस तरह मैट्रो की यात्रा सुखद यात्रा है। भीड़ के दबाव को कम करने के लिए अद्‌भुत देन है।

प्रतिवेदन (रिपोर्ट)—लेखन या प्रस्तुतीकरण भी एक कला है, जिसमें किसी दिए गए विषय, घटना, योजना, परियोजना, कार्य का नियोजन आदि को ब्योरे के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। वर्तमान में यह टेलीविजन, रेडियो, अखबार की विशिष्ट विधा बनती जा रही है। विद्यार्थियों को निंरतर अभ्यास द्वारा इसमें निपुणता प्राप्त करनी चाहिए।

प्रतिवेदन के माध्यम से किसी समिति, संस्था, सभा, सम्मेलन के आयोजन और उसकी कार्यवाही को कलमबद्ध किया जाता है।

प्रतिवेदन का आकार संक्षिप्त होना चाहिए। इसके अलावा उसमें पूर्णता एवं संतुलन होना आवश्यक है।

प्रतिवेदन के कुछ नमूने निम्नलिखित हैं—

1. 'उत्साह' संगठन द्वारा आयोजित रक्तदान शिविर पर प्रतिवेदन

08 अप्रैल 2013

आज आदर्शनगर की सरकारी डिस्पेंसरी में 'उत्साह' संगइन के युवा डॉक्टरों द्वारा रक्तदान शिविर का सफल आयोजन किया गया। ठीक साढ़े नौ बजे स्वास्थ्य सचिव के आगमन के साथ यह कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। यह 'उत्साह' संगठन के कार्यकत्ताओं द्वारा चलाए गए जन-जागरूकता अभियान का परिणाम था कि नौ बजे तक वहाँ बीस से अधिक युवा रक्तदाता स्वैच्छिक रक्तदान के लिए पहुँच गए थे। आयोजन मंडल प्रमुख ने स्वास्थ्य सचिव के स्वागम के उपरांत आवश्यक उपकरणों और तैयारियों को देखने का अनुरोध किया। उनकी अनुमति मिलते ही डॉक्टर, नर्स अपने-अपने काम में जुट गए। एक-एक कर युवक रक्तदान के लिए आते रहे। एक फार्म भरकर आवश्यक जाँच के बाद उनका रक्त लिया जाने लगा। दोपहर तक लगभग एक-सौ से अधिक युवा रक्तदान कर चुके थे। स्वास्थ्य सचिव के निर्देशन में इसे सरकारी अस्पतालों में भिजवाया गया ताकि लोगों की जान बचाई जा सके। अंत में स्वास्थ्य सचिव ने रक्तदान की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए वहाँ उपस्थित जनसमुदाय का उत्साहवर्धन किया। लोगों से स्वैच्छिक रक्तदान करने का वचन लेते हुए इसका समापन किया गया।

2. विद्यालय में आयोजित आपदा-प्रबंधन संबंधी मॉक ड्रिल पर प्रतिवेदन

02 मई 2013

आज रा. व. मा. बल विद्यालय 'ए' ब्लॉक जहाँगीर पुरी दिल्ली में आपदा प्रबंधन संबंधी मॉक ड्रिक का

दिल्ली महानगर में मेट्रो—व्यवस्था एक कल्पना थी, वह आज साकार रूप में हैं। मैट्रो महानगरीय भीड़ में यातायात की सुव्यवस्था है। इस पर विचार प्रकट कीजिए।

संकेत बिन्दु—1. प्रस्तावना, 2. वरदान रूप में मैट्रो और दिल्ली, 3. मैट्रो की प्रथम यात्रा, 4. मैट्रो की कहानी, 5. उपसंहार

मैट्रों का नाम हमारे लिए कल्पना था। मैट्रो रेल की तरह है, वह धरती से ऊपर चलेगी या नीचे दिल्ली में इसे साकार रूप देने के लिए कार्य सुचारू रूप से होने लगा। स्वतंभ खड़े होने लगे। स्तंभों के ऊपर पटनी टाँग दी गई। देखते ही देखते ऊपर ही स्टेशन बनने लगे। इस तरह स्वतंभ, स्तंभों के ऊपर पटरी, स्टेशन, मैट्रो खड़ी हो गई। जनता के लिए सब कुछ नया और आश्चर्यजनक।

दिल्ली की जनसंख्या निरंतर अप्रत्याशित रूप से बढ़ रही है, उसके अनुरूप वाहनों की संख्या में अप्रत्याशित वृद्धि हो रही है। वाहनों के निंरतर धुआँ उगलते रहने से दिल्ली का प्रदूषण भी लगातार बढ़ रहा है। ऐसी चरमराती विषम-परिस्थितियों में मैट्रो वरदान सिद्ध हुई। मैट्रो स्टेशनों की सुव्यवस्था को देखकर यात्री सुखद आश्चर्य का अनुभव करते हैं। इससे समय में बचत होती है तथा यात्रा सुरक्षित ढंग से पूरी होती है।

लोगों में मैट्रों ट्रेन की यात्रा के प्रति तरह-तरह की जिज्ञासा तथा उत्सुकता थी। इसे शांत करने तथा यात्रा करने के उद्देश्य से मैंने मैट्रो स्टेशन पर टोकन लिया। टोकन को विशेष स्थान पर रखते ही खटाक से प्रवेश द्वार खुल और मैं स्वचालित साढ़ियों से जा चढ़ा। ऊपर के सौंदर्य को देख भी न पाया था तब-तक तो मैट्रों आ गई। मैट्रों-रूकी माइक से सूचना मिल रही थी, यात्रियों को सावधान किया जा रहा था। मैट्रों का दरवाजा खुला और सभी यात्रियों को चढ़ता देख मैं भी मैट्रो में चढ़ गया। स्वयमेव ही मैट्रो का दरवाजा बंद हुआ। मैट्रो आगे बढ़ी।

मैट्रो के अंदर भी प्रत्येक स्टेशन की, और सावधानियाँ बरतने की सूचना मिल रही थी, स्टेशनों की स्वचालित लिखिता सूचनाएँ हिंदी-अंग्रेजी में मिल रही थी। इन सबको देखने में मैं तल्लीन था। की गंतव्य स्टेशन आ पहुँचा। घंटों की यात्रा, मिनटों में हो गई। अब प्रतीत हुआ कि मैट्रो सबके लिए सुखद-आश्चर्य हैं।

मैट्रो के दिल्ली प्रांतीय सरकार और केंद्रीय सरकार ने संयुक्त रूप से सम्बन्धित संस्था में सन् 1995 में पंजीकरण करवाया और 1996 में 62.5 कि.मी. की दूरी के लिए मैट्रो परियोजना को स्वीकृति मिल गई। दिसम्बर 2002 में परियोजना कोा साकार रूप मिल गया। 24 दिसम्बर को प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने हरी झंगी दिखाई और मैट्रो चल पड़ी। आज मैट्रो की उपयोगिता और सफलता को देखकर इस परियोजना ने पैर पसारना शुरू कर दिया हैं। मैट्रो के कई रूट नए शुरू हो गए हैं और नए-नए रूटों पर प्रगति से कार्य चल रहा है।

मैट्रो ने अपनी अलग पहचान, अपना अलग अस्तित्व बनाया है। इसके अस्तित्व को बनाए रखने के लिए

विद्यार्थी निम्नलिखित संकेत बिन्दुओं के आधार पर प्रभावशाली ढंग से निबंध लिखें।

1. **हमारा प्यार भारत वर्ष**—1. भारत का नामकरण, 2. गौरवशाली इतिहास, 3. प्राकृतिक सौंदर्य, 4. अनेक संस्कृतियों व धर्मों का संगम, 5. अनेकता में एकता, 6. निष्कर्ष
2. **विज्ञान वरदान या अभिशाप**—1. प्रस्तावना, 2. आधुनिकता युग विज्ञान का युग, 3. विज्ञान की उपयोगिता, 4. विज्ञान का दुरूपयोग मानव जीवन के लिए अभिशाप, 5. निष्कर्ष
3. **बेरोजगारी की समस्या**—1. परिचय, 2. बेरोजगारी देश के विकास में किस प्रकार बाधक है ?, 3. दुष्परिणाम, 4. बेरोजगारी के कारण 5. बेरोजगारी की समस्या से निजात पाने का उपाय, 6. निष्कर्ष
4. **समाज में फैलता भ्रष्टाचार**—1. भूमिका, 2. भ्रष्टाचार का अर्थ, 3. भ्रष्टाचार की व्यापकता, 4. भ्रष्टाचार के कारण, 5. भ्रष्टाचार उन्मूलन के उपाय।
5. **महानगरीय जीवन की समस्याएँ**—1. भूमिका, 2. महानगरों के आकर्षण के कारण, 3. महानगरों की समस्याएँ, 4. महानगरीय समस्याओं का निदान, 5. उपसंहार
6. **नारी शिक्षा का महत्त्व**—1. प्राचीन काल में नारी का स्थान, 2. स्वतंत्रता से पूर्व नारी का स्थान, 3. स्वतंत्रता के बाद नारी-शिक्षा व उसके जीवन स्तर में सुधार, 4. संतान की प्रथम पाठशाला, 5. देश के विकास के लिए नारी शिक्षा आवश्यक, 6. उपसंहार
7. **प्रदूषण की समस्या**—1. प्रदूषण, 2. प्रदूषण की व्यापकता, 3. प्रदूषण के दुष्प्रभाव, 4. प्रदूषण से बचने का उपाय, 5. उपसंहार
8. **संगति का प्रभाव**—1. भूमिका, 2. संगति के प्रभाव, 3. संगति के प्रकार, 4. उदाहरण, 5. निष्कर्ष।
9. **विद्यार्थियों में घटते मानवीय मूल्य**—1. मानवीय मूल्य का अर्थ, 2. आवश्यकता, 3. मानवीय मूल्य घटने के कारण, 4. मानवीय मूल्यों की कमी से समाज को हानियाँ, 5. उपसंहार
10. **मेरी अविस्मरणीय यात्रा**—1. प्रस्तावना, 2. यात्रा का वर्णन, 3. स्वास्थ्यवर्धक जलवायु, 4. प्राकृतिक सौन्दर्य का प्रभाव, 5. यात्रा की उपयोगिता, 6. निष्कर्ष।
11. **जीवन में खेलों का महत्त्व**—1. खेलों के प्रकार, 2. खेलों का महत्त्व, 3. धन यश प्राप्ति के स्थान, 4. अनुशासन का पालन, 5. मानवीय मूल्य बढ़ाने में सहायक।
12. **निरंतर बढ़ती महँगाई**—1. प्रस्तावना, 2. महँगाई के कारण, 3. समाजिक जीवन पर महँगाई का प्रभाव 4. महँगाई दूर करने का उपाय, 5. जमाखोरी की प्रवृत्ति, 6. निष्कर्ष।

मैट्रो यात्रा

भागीदारी ।

6. **विज्ञापन और हमारा जीवन**

(भूमिका, विज्ञापनों का उद्देश्य, विज्ञापनों का प्रभाव, विज्ञापनों के लाभ, विज्ञापनों की हानियाँ, उपसंहार)

7. **मेरे जीवन का लक्ष्य**

संकेत बिन्दु—लक्ष्य का निश्चय, लक्ष्यपूर्ण जीवन के लाभ, लक्ष्यपूर्ति का प्रयास ।

8. **महंगाई**

संकेत बिन्दु—महंगाई निरन्तर विकास की ओर, गरीबों पर कुप्रभाव, बच्चों की पढ़ाई पर प्रभाव, महंगाई पर नियंत्रण पाने हेतु सरकार द्वारा किए गए उपाय ।

निबंध लेखन–10 अंक (250-300 शब्द)

निबंध—निबंध गद्य साहित्य की वह विद्या है जिसमें निबंधकार किसी विषय पर अपने विचार स्वतंत्र रूप से व्यक्त करता है । निबंधकार के विचार पूर्णतया मौलिक एवं श्रृंखलाबद्ध होते है जिसमें क्रमबद्धता दिखाई देती है ।

निबंध की विशेषताएँ—एक निबंध की निम्नलिखित विशेषताएँ होती है—

(1) निबंध की भाषा सरल सहज एवं विषयानुकूल होनी चाहिए ।

(2) निबंधकार के विचारों में क्रमबद्धता एवं सुसंबधता होनी चाहिए तथा उनके विचार सुसंगत होने चाहिए ।

(3) विचारों में क्रमबधता एवं सुसंबधता होनी चाहिए ।

(4) बार-बार एक ही वाक्य के प्रयोग से बचना चाहिए ।

(5) सूक्तियों लोकक्वियों तथा मुहावरों का प्रयोग कर निबंध की भाषा को सरल रोचक एवं प्रभावशाली बनाना चाहिए ।

निबंध के मुख्यतः तीन अंग होते हैं । इसी आधार पर प्रभावशाली ढंग से निबंध लिखा जाना चाहिए ।

1. **परिचय/भूमिका**—निबंध की भूमिका ऐसी होनी चाहिए जिसमें आकर्षण हो एवं रोचकता का समावेश हो और जिससे पाठक के मन में प्रारम्भ में अंत तक निबंध पढ़ने की रूचि उत्पन्न हो ।
2. **विस्तार**—विस्तार निबंध का द्वितीय अंग माना जाता है जिसमें निबंध के विषय का पूर्ण विवेचन अलग-अलग अनुच्छेदों में प्रस्तुत किया जाता है ।
3. **उपसंहार**—यह बिनंध का अतिम भाग है जिसमें निबंध का सार समाहित होता है । अतः इसें विचारों का सार (मूल भाव) प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया जाना चाहिए ।

प्रिय रंजना

सस्नेह स्मरण

तुम्हारा बधाई पत्र मिला। पढ़कर अपार प्रसन्नता मिली। यूँ तो आजकल मैं बहुत खुश हूँ क्योंकि ढेर सारे बधाई संदेश मिल रहे हैं, विद्यालय से मित्रों अध्यापकों से परिचितों से अपरिचित से। सभी मेरी पीठ थपथपा रहें हैं। परंतु तुम्हारे बधाई पत्र को पाकर मैं सचमुच बहुत प्रसन्न हूँ। क्योंकि तुम्हारे शब्दों को मैं बहुत महत्त्व देती हूँ। तुम्हारी प्रेरणा से ही मैंने इस दिशा में इतनी उन्नति की है। तुमने सफलता में ही नहीं असफलता के क्षणों में भी मुझे उत्साह दिया है। मेरी उस सपुलता में तुम्हारे उत्साह बल न होता तो शायद आज मैं इस शिखर पर न पहुँच सकती।

तुम्हारे बधाई-पत्र के लिए कैसे कृतज्ञता व्यक्त करूँ शब्दों में सामर्थ्य नहीं वचन हो रहे बौंने।

मम्मी पापा को सादर नमस्कार।

तुम्हारी सुमेधा

विभिन्न विषयों और संदर्भों पर विद्यार्थियों के तर्क संगत विचार प्रकट करने की क्षमता परखने के लिए संकेत बिन्दुओं पर आधारित समसामयिक एवं व्यावहारिक जीवन से जुड़े हुए विषयों पर 200 से 250 शब्दों के किसी एक विषय पर निबंध।

निबंध

1. प्रदूषण की समस्या

प्रदूषण का अर्थ—प्रदूषण के प्रकार, कारण, प्रदूषण रोकने के उपाय, उपसंहार

2. साम्प्रदायिकता एक अभिशाप

संकेत बिन्दु—साम्प्रदायिकता का अर्थ, भारत में साम्प्रदायिकता, साम्प्रदायिक घटनाएँ समाधान।

3. भ्रष्टाचार

संकेत बिन्दु—भ्रष्टाचार का अर्थ, बढ़ता स्वरूप, भ्रष्टाचार के कारण, भ्रष्टाचार को खत्म करने का प्रयास।

4. कप्यूटर : आज की महत्व

कम्प्यूटर का परिचय, कम्प्यूटर से होने वाली सुविधाएँ, उपयोगिता, इसका वर्तमान जीवन पर प्रभाव, इसके प्रयोग में बरती जाने वाली सावधानियाँ, निष्कर्ष

5. लड़का-लडकी एक सामान

संकेत बिन्दु—लड़का-लड़की बराबर, दोनों एक दूसरे के पूरक, समाज में भेदभाव, लड़की की बराबरी

कक्षा दसवीं बी
अनुक्रमांक 837
दिनांक 22 मार्च 2013

(ii) आपके नगर के विद्युत अधिकारी को बिजली की कटौती के कारण पढ़ाई में आने वाली कठिनाइयों की चर्चा करते हुए इसमें सुधार के लिए पत्र लिखिए।

प्रेषक
केवल कृषण
22 मॉडल टाउन
डिब्रूगढ़
दिंनाक 13

सेवा में,

विद्युत अधिकारी
डिब्रूगढ़

महोदय,

मैं आपका ध्यान बिजली संकट की ओर दिलना चाहता हूँ। पिछले छः मास से नगर की विद्युत आपूर्ति खंडित हो गई है। जब चाहे बिजली चली जाती हैं। और घंटों नहीं आती है।
महोदय मैं एक विद्यार्थी हूँ। मेरे जैसे अन्य विद्यार्थी भी बिजली गुल होने कारण बेहद तनाव में हैं। यदि ऐसा चलता रहा तो हमारा कैरियर चौपट हो जाएगा। कृपाया आप कुछ कीजिए जिससे हमें नियमित बिजली मिलती रहे।

भवदीय
केवल कृष्ण

(iii) तुम 454 प्रेमनगर जोधपुर की निवासी सुमेधा हो। तुम्हें तुम्हारी सखी रंजना ने पत्र द्वारा बधाई भेजी है। जिसमें तुम्हें और अधिक आगे बढ़ने की प्रेरणा दी गई। अपनी सखी को इस बधाई पत्र के प्रत्युत्तर में एक कृतज्ञता पत्र लिखिए।

सुमेधा
454 प्रेमनगर
जोधपुर
10 मार्च 2013

जाी थी, अब पराए मर्द के साथ नाटक में काम करने के लिए राजी हो गई। लेखिका के साथ मिलकर अनेक नाटकों का मंच किया और बाढ़ पीड़ितों के लिए धन एकत्र किया। इस प्रकार लेखिका ने डालमिया नगर में नारी-चेतना जगाने का भरपूर प्रयास किया।

खंड-घ

रचना

पत्र लेखन

पत्र लेखन एक महत्त्वपूर्ण कला है आज के अति व्यस्त युग में इसका महत्त्व और अधिक बढ़ गया है। आज मानव के सरोकार बहुत अधिक बढ़ गए हैं उसे प्रतिदिन कितने ही व्यक्तियों संबंधियों कार्यालयों से संपर्क साधना पड़ता है। हर स्थान पर वह व्यक्तिगत रूप से उपस्थित नहीं हो सकता। उसे पत्र का सहारा लेना पड़ता है। अत: छात्रों के भी पत्र का सहारा लेना पड़ता है।

पत्र के प्रकार—पत्र अनेक प्रकार के होते हैं उन्हें दो भागों में विभाजित किया जा सकता है।

1. **औपचारिक पत्र**—उसे कार्यालीय पत्र भी कहते हैं ये पत्र हम किसी अधिकारी विशेष को लिखते हैं।

2. **अनौपचारिक पत्र**—उसे व्यक्तिगत पत्र भी कहा जाता है। ये पत्र हम किसी अपने परिजनों को लिखते हैं।

(i) आप चेन्नई के रामचंद्र हैं आपका अनुक्रमांक 837 तथा कक्षा दसवीं वर्ष आपका मासिक शुल्क कम था, इस बार भी प्रधानाचार्य को मासिक शुल्क कम करने के लिए प्रार्थना पत्र लिखिए।

सेवा में,

प्रधानाचार्य
केन्द्रीय विद्यालय
आवडी
चेन्नई

विषय—मासिक शुल्क कम कराने हेतु

महाशय

सविनय निवेदन है कि मैं आपको विद्यालय में कक्षा दसवीं बी छात्र हूँ गत वर्ष मेरे पिता का देहांत हो गया था जिसके कारण पिछले वर्ष मेरा मासिक शुल्क कम कर दिया गया था। आपसे निवेदन है कि इस वर्ष भी मेरा शुल्क कम कर दें ताकि मैं अपनी पढ़ाई जारी रख सकूँ।

श्रीमानजी मैंने नवीं कक्षा में 85% अंक लाकर विद्यालय के अगणी दास छात्रों में स्थान प्राप्त किया है। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि इस वर्ष भी लगन और परिश्रम से स्थान बनाए रखूँगा।

धन्यवाद
प्रार्थी
रामचंद्र

जानकर सभी हैरान रह गए क्योंकि उन्होंने यह बात सभी को बता दी थी।

2. लेखिका की नानी अपने अन्तिम समय में मुँहजोर क्यों हो गई थी ?

उत्तर— लेखिका की नानी अपनी बेटी का विवाह एक स्वतंत्रता संग्राम सेनानी से करवाना चाहती थी। उन्हें लगा कि उनकी मृत्यु के बाद उनकी बेटी का विवाह किसी सरकारी नौकर से कर दिया जाएगा। अत: अपने अन्तिम समय में समय की कमी तथा बेटी के विवाह की चिंता के के कारण वे मुँहजोर हो गई थी।

3. अचला कौन थी तथा उसने क्या-क्या किया ?

उत्तर— अचला लेखिका की सबसे छोटी बहन थी। उसने पिता का कहना मानकर अर्थशास्त्र में एम.ए. किया फिर पत्रकारिता का कोर्स किया विवाह के बाद गृहस्थी में मन नहीं लगने के कारण लेखिका बन गई।

4. लेखिका की माँ की चारित्रिक विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर— लेखिका की माँ परमपरावादी नहीं थी। वह निष्पक्ष, ईमानदार तथा सत्यवादी होने के साथ-साथ एक अच्छी परामर्शदाता भी थी। यही कारण था कि उन्हें घर वाले सम्मान देते एवं बाहरवाले दोस्त बन जाते थे।

5. लेखिका की बहन चित्रा की विशेषताएँ बताइए।

उत्तर— चित्रा स्वयं नहीं पढ़ती थी पर दूसरों को पढ़ाने में रूचि लेती थी, इसी से परीक्षा में उसके कम अंक आते थे। वह खुले विचारों की लड़की थी। उसने अपने लिए स्वयं लड़का पसंद किया और उसी से विवाह किया।

6. लेखिका की दादी ने चोर का जीवन किस प्रकार बदल दिया ?

उत्तर— एक बार हवेली के सारे पुरूष किसी बारात में चले गए और औरतें रतजगा कर रही थी। घर की पुरखिन दादी माँ एक कमरे में सोई थी। मौके का फायदा उठाकर एक चोर घर में घुस गया। दादी की आँख खुली उन्होंने पूछा कौन ? चोर ने जवाब दिया 'जी मैं'। दादी ने कुएँ से पानी लाने का आदेश दिया। चोर घबराया हुआ पानी लाने चला गया। पानी लेकर लौटते समय उसे पहरेदार ने पकड़ लिया। दादी ने लोटे का आधा पानी स्वयं पीया और आधा चोर को पिलाकर कहा—''आज से हम दोनों माँ बेटे हुए, चाहे तो चोरी कर, चाहे खेती।'' चोर ने चोरी का धन्धा छोड़ खेती अपना ली। इस प्रकार उसका जीवन बदल गया।

7. लेखिका ने डालमिया नगर में नारी-चेतना जगाने का प्रयास किस प्रकार किया ?

उत्तर— लेखिका शादी के बाद बिहार के पिछड़े कस्बे डालमिया नगर में रहने गई। यहाँ का समाज इतना पुरातन पंथी था कि मर्द औरते चाहे पति-पत्नी क्यों न हों, एक साथ बैठकर सिनेमा नहीं देख सकते थे। अभिनय की शौकीन लेखिका ने साल भर के प्रयास से वहाँ के स्त्री-पुरूषों को एक साथ नाटक में काम करने के लिए तैयार कर लिया। वे महिलाएँ जो अपने पति के साथ फिल्म तक नहीं देखने

उत्तर— नौजवादन के पानी में उतरते ही कुत्ता भी पानी में कदू गया। क्योंकि दोनों भावनात्मक से एक दूसरे से जुड़े थे। इसीलिए अपने कुत्ते को नाव से उतार देने की बात सुनकर नौजवान भी नाव से कूद गया। और मालिक को पानी में कूदता देख कुत्ता भी पानी में कुद पड़ा।

5. बाढ़ पीड़ित क्षेत्र में कौन-कौन सी बीमारी फैलने की आशंका रहती है ?

उत्तर— बाढ़ पीड़ित क्षेत्र में पकाही घाव, हैजा, आंत्रशोध, मलेरिया जैसी बीमारी फैने की आशंका रहती है।

1. लेखक ने एक ओर बाढ़-पीड़ितों की मदद की है तो दूसरी तरफ इस विषय पर बहुत कुछ लिखा भी है—स्पष्ट कीजिए।

उत्तर— लेखक परती क्षेत्र का होने के कारण अपने गाँव के अन्य लोगों की तरह नहीं जानता था। इसके बाद भी दस साल की उम्र से ही ब्बॉय-स्काउट, स्वयं सेवक, राजनीतिक कार्यकर्त्ता अथवा रिलीफवर की हैसियत से बाढ़-पीड़ित क्षेत्र में कार्य करता रहा। इसके साथ ही हाई स्कूल में बाढ़ पर लेख लिखकर प्रथम स्थान प्राप्त किया। लेखक ने 'धर्म युग' में 'कथादशक' के अंतर्गत बाढ़ की पुरानी कहानी को नए पाठ के साथ प्रस्तुत किया। जय गंगा मैया, डायन कोसी, हड्डियों का पुल आदि रिपोर्ताज के साथ उनके द्वारा लिखे अनेक उपन्यासों में बाढ़ की विनाशशीलता के चित्र अंकित हैं।

2. सवेरे साढ़े पाँच बजे पानी आने की खबर सुनकर लेखक की क्या प्रतिक्रिया हुई ? उसने क्या दृश्य देखा। [CBSE 2010]

उत्तर— सवेरे साढ़े पाँच बजे पानी आने की खबर सुनकर लेखक आँखें मलता छत पर गया। पानी से घिरे लोग चीख-पुकार रहे हैं। चारो ओर शोर ही शोर है। पानी का बहाव तेज है। घर के पीछे तक पानी आ गया है।

लगातार तेज बढ़ते पानी को कुछ लोग गंगा का बता रहे हैं, कुछ सोन का। बढ़ते हुए पानी में मकान की दीवार पेड़ों के तने डूबते जा रहे हैं। उसके देखते-देखते गोलपार्क डूब गया। चाय वाले की झोपड़ी बह गई इन दृश्यों को देखकर लेखक सोचता है कि उसके पास यदि मूवी कैमरा या टेपरिकार्डर होता तो फोटो खींचता तथा आवाज और शोर शराबे की टेप कर लेता।

मेरे संग की औरतें : मृदुला गर्ग

यह एक आत्मसस्मरणात्मक गद्य है। इसमें लेखिका ने अपने परिवार की औरतों-नानी, माँ तथा अपनी चार बहनों के बारे में बताया है। उनके घरेलू, आर्थिक, सामाजिक तथा शैक्षिक स्थिति से परिचित कराया है। सामाजिक, रूढ़ियों में जकड़ा व्यक्ति भी वैचारिक स्तर पर आजाद हो सकता है।

1. लेखिका की परदादी ने ऐसी कौन-सी बात कह दी, जिसे सुन सभी हैरान रह गए ?

उत्तर— लेखिका की परदादी को पौत्र की नहीं पौत्री की चाहत थी। उन्होंने भगवान से पतोहू की पहली संतान लड़की माँगी। उस समय यह दुआ सभी को चौकाने वाली लगी। समाज सदा से लड़के की कामना करता रहा है, पर परदादी ने वह दुआ माँगी जिसे समाज बोझ समझता रहा था। उनकी मन्नत को

6. शिशिर ऋतु में कौन-कौन से फल और सब्जियाँ उगते हैं ?

उत्तर— शिशिर ऋतु में झाड़ू अनार, अमरूद, बेर आदि फल पक जाते हैं तथा आमों की मंजरियाँ लग जाती है। सब्जियाँ में आलू, गोभी, बैंगन, मूली, पालक, धनियाँ, टमाटर मिर्च आदि फल-फूल जाती हैं।

पूरक पुस्तक : कृतिका भाग

पूरक पुस्तिका 'कृतिका' के निर्धारित पाठों पर आधारित एक मूल्य परक प्रश्न पूछा जाएगा।

इसप्रश्न का कुल भार पांच अंक होगा।

इस जल प्रय में : फणीश्वर नाथ रेणु

इस पाठ में रेणुजी ने बाढ़ की विभीषिका को प्रत्यक्ष रूप से देखा और अनुभव किया है। लेखक उस क्षेत्र का रहने वाला है। जहाँ विभिन्न नदियों के बाढ़-पीड़ित शरण लेते हैं। यह पाठ मूल रूप से आपदा प्रबंधन से जुड़ा हुआ है। जिंदगी है तो आपदाएँ भी है। प्रबंधन में आत्मनिर्भरता आवश्यक है। जो स्वयं का प्रबंधन कर लेता है, वही दूसरों की भी मदद कर सकता है।

1. बाढ़ की खबर सुनकर लोग किस तरह तैयारी में जुट गए ?

अथवा

अपने इलाके में बाढ़ आने की आशंका होने पर लेखक ने क्या-क्या प्रबंध किया ?

उत्तर— लोगों ने जैसे ही बाढ़ की खबर सुनी दैनिक जीवन की आवश्यकता वस्तुएँ जैसें—आलू, मोमबती दियासलाई, पीने का पानी और आवश्यक दवाएँ एकत्र करने में जुट गए। जिससे पानी में घिरने के बाद इन वस्तुओं का अभाव झेलना पड़े। लेखक, ने भी उपयुक्त सामग्री अपने घर में रख ली थी।

2. लेखक की बाढ़ में घिरे द्वीप पर टहलने की इच्छा अधूरी क्यों रह गई

उत्तर— लेखक बाढ़ से घिरे द्वीप पर टील कर अपने पैर को आराम देना चाहता था। लेकिन उस द्वीप पर साँप-बिच्छू, चींटी-चींटी, लोमड़ी-सियार आदि के अलावा अन्य जीवों ने पहले से आश्रय ले रखा था, इसी कारण लेखक की इच्छा अधूरी रह गई।

3. मुसहरी जाति के लोग जिन्दादिली के प्रमाण होते हैं। सिद्ध कीजिए।

उत्तर— मुसहरी एक आदिवासी जाति है। बाढ़ से घिरे भूख-प्यासे मुसहरी मछलियाँ और चूहे खाने को विवश थे।

लेकिन ढोल की थाप पर अभिनय करते हुए आनन्दित थे एवं खिलखिला रहे थे। विषम परिस्थितियों में भी हँसने खिलखिलाने से सिद्ध होता है कि मुसहरी जाति के लोग जिन्दादिली के प्रमाण है।

4. नौजवान के पानी में उतरते ही कुत्ता भी पानी में कूद गया। दोनों ने ऐसा क्यों किया ?

सभी सराहना करते हैं। जबकि कवि के लिए रोना भी गुना है।

6. किस शासन की तुलनात्मक के प्रभाव से की गई है और क्यों ?

उत्तर— ब्रिटिश शासन की तुलना तम के प्रभाव से की गई है क्योंकि ब्रिटिश शासकों ने बेकसूर भारतीयों पर घोर अत्याचार किए। उनहें तरह-तरह की यातनाएँ दी।

7. कोकिल की काली की संज्ञा क्यों दी गयी है ?

उत्तर— क्योंकि काली युद्धोन्माद की देवी है। कोकिल भी रंग में काली है, उसका मधुर स्वर आजादी का प्रतीक है। वह अपनी अंतरात्मा से आवाज कर रही है। मुक्ति का संघर्ष छेड़ने की प्रेरणा देने के कारण ही कवि ने कोंकिल को काली की संज्ञा दी है।

ग्रामश्री (सुमित्रा नंदन पंत)

1. कवि ने गाँव को हरता जन मन क्यों कहा है ?

उत्तर— क्योंकि गाँव की शोभा अनुपम है खेतों में दूर-दूर तक हरियाली फैली है सूरज की धूप चमक रही है। तरह तरह के फूलों पर रंगीन तितलियाँ मंडरा रही है। और मीठे फल पैदा होने लगे हैं। सब्जियों खूब फल रहे हैं गंगा के किनारे तरबूजों की खेती फैलने लगी है। पक्षी आनंद विहार कर रहे हैं। ये सभी मनमोहक दृश्यों के कारण गांव के हरता जन मन कहा गया है।

2. भाव स्पष्ट करें।

बालू के सांपों से अंकित
गंगा की सतरंगी रेती

उत्तर— गंगा तट की रेत बल खाते साँप की तरह लहरदार है और वह विधि रंगों वाली है।

3. हिल हरित रूधिर है रहा झलक का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर— घास के हरे-हरे तिनकों पर सूर्य के प्रकाश की उज्जवलता से लगता है मानो उनकी नसों में हरा खून दौड़ रहा है।

4. गांव में चारों ओर मखमली हरियाली और रंगों कीलाली छाई हुई है। विविध फसलें लहलहा रही है। वातावरण नमोहक सुगंधों से भरपूर है। रंगीन तितलियाँ उड़ रही है। सूरज की मीठी-मीठी धूप रत्नों के समान जगमगा रही है इसलिए इस गांव के तुलना मरकत डिब्बे से की गयी है।

5. सुरखाव और मगरौठी गंगा के तट पर किस प्रकार आनंद लेते हैं ?

उत्तर— सुरखाव पक्षी गंगा के बहते जल पर तैर रहा है और मगरौठी किनारे की ठण्डक पर सोई हुई है। इस प्रकार वे आनन्द में मग्न है।

उत्तर— रसखान अगले जन्मों में बार-बार ब्रजभूमि पर ही जन्म लेना चाहते हैं। वे मनुष्य के रूप में ग्वालों के संग रहना, पशु के रूप में नंदबाबा के गायों के साथ, पत्थर के रूपमें गोवर्धन पर्वत में रहना, पक्षी के रूप में यमुना किनारे कदम के वृक्ष में बसेरा करना चाहते हैं।

3. आपके विचार से रसखान कवि पशु, पक्षी और पहाड़ के रूप में कृष्ण सान्निध्य क्यों प्राप्त करना चाहता है ?

उत्तर— क्योंकि रसखान को ब्रजभूमि से अगाध प्रेम है। वे प्रत्येक वस्तु से किसी न किसी रूप में समीपता चाहते हैं।

4. गोपी कृष्ण की मुरली को अपने अधरों पर क्यों नहीं रखना चाहती ?

उत्तर— क्योकि गोपी मुरली के प्रति सौतिया डाह रखती है कृष्ण सदा मुरली बजाने में लीन रहते हैं गोपियों पर ध्यान नहीं देते अतः वह मुरली से ईर्ष्या करती हैं।

5. माई री वा मुख की मुसकानि सम्हारी न जैहै, न जैहै, न जैहैं भाव स्पष्ट करें।

उत्तर— गोपियां कृष्ण की मधुर मुस्कान पर अपना सर्वस्व भुला चुकी हैं लाख मना करने पर भी वह अपने आपको रोक नहीं पाती। गोपियाँ कृष्ण की मुरली की दीवानी न हो कर कृष्ण की मधुर मुस्कान की दीवानी है।

कैदी और कोकिला (माखनलाल चतुर्वेदी)

1. हथकड़ियों को गहना क्यों कहा गया है ?

उत्तर— क्योंकि हथकड़ियां स्वतंत्रता के लिए आवाज उठाना है। जोकि प्रत्येक भारतीय के लिए सौभाग्य की बात है।

2. मृदुल वैभव की रखवाली—'सी कोकिला बोलो तो—पंक्ति का आशय स्पष्ट करें।

उत्तर— कवि कोयल से पूछ रहा है कि तुम राम में क्यों कूक रही हो ?क्या तुमने अपने देख के वैभव और सम्पन्नता को लुटते देखा है ? क्योंकि कभी तुम इस वैभव की रखवाली किया करती थी। पर आज विवश हो।

3. कैदी और कोकिल कविता की जेल में बंद कैदी की दशा कैसी थी ?

उत्तर— जेल में बंद कैदी दयनीय दशा में जी रहे थे। वे ऊँची-ऊँची काली दीवारों में कैद थे। उन्हें कालकोठरी में जंजीरों से बाँधकर रखा जाता था और कठोर परिश्रम कराया जाता था।

4. कवि को कैदी के रूप में जेल में क्या क्या काम करने पड़ते थे ?

उत्तर— कवि को जेल में कैदी के रूप में कोल्हु का बैल बनना पड़ता था और हथौड़े से पत्थर तोड़नी पड़ती थी।

5. कवि को कोयल से ईर्ष्या क्यों हो रही थी ?

उत्तर— क्योंकि कोयल स्वतंत्र है जबकि कवि अंधेरी कोठरी में जीने के लिए विवश है कोयल का मान की

1. कबीर ने संसार को स्वान रूप क्यों कहा है ?

उत्तर— जैसे हाथी को चलते देखकर कुत्ता अवश्य भौंकता है वैसे ही किसी को ऊँची साधना में लगे देखकर लोग उसकी निंदा करते हैं। इसलए संसार को स्वान रूप कहा गया है।

2. कबीर के अनुसार सच्चा संत कौन है ?

उत्तर— सच्चा संत वही है जो बैर विरोधों से हटकर ईश्वर का भजन करता है।

3. कबीर ने ईश्वर प्राप्ति का क्या उपाया बताया है ?

उत्तर— अपने अंर्तमन में खोजने की प्रेरणा दी है।

4. ज्ञान की आँधी आने पर व्यक्ति के व्यवहार में क्या-क्या परिवर्तन दिखाई देते हैं ?

उत्तर— सारे पाप नष्ट हो जाते हैं मन का भ्रम दूर हो जाता है। माया मोह स्वार्थ धन तृष्णा आदि विकार समाप्त हो जाते हैं और आनंद छा जाता है।

5. आँधी पीछे जो जल बुठा, हरि जन भीजे आष्य स्पष्ट करें।

उत्तर— ज्ञान रूपी आँधी के पश्चात् भक्ति रूपी जल की वर्षा हुई जिसके प्रेम में हरि के सब भक्त भींग गए।

वाख (ललद्यद)

1. कवयित्री ललद्यद किस रस्सी से कौन-सी नाव खींचना चाहती है ?

उत्तर— वह जीवन की कच्चे धागे रूपी रस्सी से प्रभु भक्ति की नाव खींचना चाहती है।

2. ललद्यद के अनुसार परमात्मा प्राप्ति के मार्ग में कौन-कौन-से बाधाएँ सामने आती है।

उत्तर— मनुष्य की नश्वरता, सांसारिक भोग, अहंकार, हठयोग।

3. कवयित्री ललद्यद ने परमात्मा प्राप्ति के लिए क्या उपाय बताया है ?

उत्तर— परमात्मा प्राप्ति के लिए दिल में हूक उठना आवश्यक है, त्याग एवं भोग में सामंजस्य स्थापित करके अपने आत्मज्ञान द्वारा।

4. कवयित्री ने कच्चे सकोरे किसे कहते हैं ?

उत्तर— जीवन की नश्वरता को।

5. ज्ञानी है तो स्वयं को जान आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर— जो स्वयं को जानता है।

सवैये (रसखान)

1. गोपी श्रीकृष्ण द्वारा अपनाई गई वस्तुओं को क्यों धारण करना चाहती है ?

उत्तर— गोपी श्रीकृष्ण से प्रेम करते हुए उसका सान्निध्य चाहती है।

2. रसखान का ब्रजभूमि के प्रति प्रेम किस प्रकार प्रकट हुआ है ?

श्यामल तू तल पर झुका हुआ

नभ का चिर निर्मल नील फलक

(क) कवि ने हरियाली को मखमल के समान कोमल क्यों कहा है ?

उत्तर—हरियाली की कोमलता व मधुरता के कारण ।

(ख) हरी घास पर पड़ी ओस की बूंदों को देखकर कवि क्या कहता है ?

उत्तर—ओस की बूँद सूर्य के प्रकाश में हरित रक्त का आभास देती है ।

(ग) हरियाली पर सूर्य की किरणों कैसी लग रही है ?

उत्तर— चांदी की उजली जाली के समान लग रही है ।

(घ) चांदी की सी उजली जाली में कोर सा अलंकार है ?

उत्तर— उपमा ।

10. रोमांचित सी लगती वसुधा

आई जौ गेहूँ में बाली

अरहर सनई की सोने की

किंकणियाँ है शोभाशाली

उड़ती भीनी तैलाक्त गंध

फूली सरसों पीली, पीली

ले हरित धरा से झांक रही

नीलम की कलि तीसी नीली

(क) वसुधा किस प्रकार रोमांचित-सी लग रही है ?

उत्तर—गेहूँ और जौ की बालियों को उगाकर ।

(ख) सरसों किस प्रकार अपना प्रभाव उत्पन्न कर रही है ?

उत्तर—अपने पीले रंग एवं तैलीय सुगधित वातावरण से

(ग) अरहर और सनई किस प्रकार शोभाशाली लग रहे हैं ?

उत्तर—अरहर और सनई की फलियों के सुनहरी रंग और बजती हुई फलियां वसुधा की कमर पर घुंघरूदार करधनी के रूप में शोभाशाली लग रही है ।

काव्य खंड पर आधारित लघुउत्तरीयप्रश्न

प्रश्न 1. निम्नलिखित लघु उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर लिखिए ।

साखियाँ एवं सबद (कबीर)

वेदना बोझ वाली सी,

कोकिल बोलो तो

क्या लूटा ?

मृदुल वैभव की

रखवाली सी

कोकिल बोलो तो

क्या हुई बावली ?

अर्धरात्रि को चीखी

कोकिल बोलो तो

किस दावानल की

ज्वालाएँ है दीखी ?

वोकिल बोलो तो !

(क) कवि एवं कविता का नाम लिखो ।

उत्तर— कवि—माखनलाल चतुर्वेदी ।

कविता—कैदी और कोकिला ।

(ख) कोयल किस समय चीखी ?

उत्तर—आधी रात के समय ।

(ग) कवि ने कोयल कीआवाज को हुक क्यों कहा है ?

उत्तर—क्योंकि कोयल की आवाज में दुख और वेदना की अनुभूति थी ।

(घ) दावानल की ज्वालाएँ का क्या आशय है ?

उत्तर—बहुत भारी दूख ।

(ङ) मृदुल वैभव की रखवाली सी किसे कहा गया है ?

उत्तर—कोयल को ।

9. फैली खेतों में दूर तलक

मखमल की कोमल हरियाली

लिपटी जिसमें रवि की किरणें

चांदी की सी उजली जालीं

तिनकों के हरे हरे तन पर

हिल हरित रूधि है रहा झलक

उत्तर—यमुना तट पर कदंब के पेड़ों की डाल पर।

6. मोरपंखा सिर उपर राखिहों गूंज की माल गरें पहिरौगी।
ओढ़ि पितंबर लै लकुटी बन गोधन ग्वारनि संग फिरौगी।
भवतो वोहि मेरो रसखानि सो तेरे कहे सब स्वांग करौगी।
या मुरली मुरली धर की अधरान धरी अधरा न धरौंगी

(क) गोपी कृष्ण का रूप धारण करने के लिए क्या-क्या करना चाहती हैं ?

उत्तर—सिर पर मोर पंख धारण, गले में गूंज की माला पहनना, पीले वस्त्र धारण, हाथों में लाठी लेकर ग्वालों के संग घूमना चाहती हैं।

(ख) गोपी होंठों पर मुरली क्यों नहीं रखना चाहती ?

उत्तर— क्योंकि गोपी मुरली के प्रति सौतिया डाह रखती है कृष्ण सदा मुरली बजाने में लीन रहते हैं गोपियों पर ध्यान नहीं देते अत: वह मुरली से ईष्या करती हैं।

(ग) पद्यांश से अनुप्रास अलंकार का एक उदाहरण छाँटकर लिखिए।

उत्तर— गोधन ग्वारनि संग फिरौगी।

7. क्या ? देख न सकती जंजीरों का गहना ?
हथकड़ियां क्यों ?यह ब्रिटिश राज का गहना
कोल्क का चर्रक चूं ? जीवन की तान,
मिट्टी पर अंगुलियां ने लिखें गान
हूँ मोट खींचता लगा पेट पर जुआ,
खाली करता हूँ ब्रिटिश अकड़ का कुंआ।
दिन में करूणा क्यों जगे, रूलानेवाली
इसलिए रात में गजब ढा रही आली ?

(क) कवि ने ब्रिटिश राज का गहना किसे कहा है ?

उत्तर— पैरों की बेड़ियां और हाथों की हथकड़ियों को।

(ख) जेल में कवि को शारीरिक दंड के रूप में कौन-कौन से काम करने पड़ते थे ?

उत्तर— हथौड़े से पत्थर तोड़ना, कोल्हु चलाना, रस्सी बांधकर मोट खींचना आदि।

(ग) ''खाली करता हूँ ब्रिटिश अकड़ का कुँआ।'' आशय स्पष्ट करें।

उत्तर— कवि यातनाएँ सहकर अंग्रेंजों के सामने अपराजेय रहकर उनकी अकड़ को तोड़ता है।

8. क्यों हूक पड़ी ?

4. आई सीधी राह से गई न सीधी राह

सुषुम सेतु पर खड़ी थी बीत गया दिन आह ।

जेब टटोली कौड़ी न पाई ।

माझीं को दूँ क्या उतराई ?

(क) सुषुम सेतु किसे कहा गया है ?

उत्तर— सुषुम्ना नाड़ी की साधना को ।

(ख) कवयित्री का दिन कैसे बीत गया ?

उत्तर— हठयोग साधना में

(ग) जेब टटोलना से क्या आशय है ?

उत्तर— अपने जीवन की उपलब्धियों के बारे में विचार करना ।

(घ) माझी शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है ?

उत्तर— ईश्वर के लिए

(ङ) सुषुम सेतु में कौन-सा अलंकार है ?

उत्तर— अनुप्रास ।

5. मानुष हों तो वह रसखाननि बसौं ब्रज गोकुल गांव के गवारन ।

जो पसु हों तो कहा बस मेरो, चरौं नित नंद की धेनु मंझारन ।

पाहन हैं तो वही गिरी को जो कियो हरिछत्र पुरंद धारन ।

जौ खग हों तो बसेरो करौं मिलि कलिंदी कूल कदंब की डारन ।

(क) रसखान मुनष्य रूप में अगले जन्म में कहाँ निवास करना चाहता है ?

उत्तर—ब्रज भूमि में

(ख) रसखान मुनष्य रूप में अगले जन्म में क्या बनना चाहते हैं ?

उत्तर—गाय चानेवाले ग्वाला ।

(ग) यह सवैया किस भाषा में रचा गया है ?

उत्तर—ब्रजभाषा

(घ) कालिंदी कूल कदंब की डारन में कौन-सा अलंका है ?

उत्तर—अनुप्रास

(ङ) कवि पक्षी बनकर कहाँ बसेरा करना चाहता है ?

उत्तर— कबी हिंदू मुसलमान के भेदभाव से परे रहनेवाला उदार मनुष्य चाहते हैं।

2. मोको कहाँ ढूँढे बंदे, मैं तो तेरे पास में
न मैं देवल ना मैं मसजिद, ना काबे कैलास में
न तो कौने क्रिया कर्म में, नहीं योग बैराग में
खोजी होय तो तुरतै ही मिलिहो। पलभर की तलाश में
कहैं कबीर सुनों भई साधो, सब स्वॉसो की स्वॉस में

(क) कवि एवं कविता का नाम लिखिए।

उत्तर— कवि कबीर, कविता—सबद

(ख) मनुष्य ईश्वर को कहाँ कहाँ ढूँढता है ?

उत्तर— मंदिर, मस्जिद, तीर्थ, योग एवं धार्मिक कर्मकांडों में।

(ग) कवि ने ईश्वर प्राप्ति के लिए क्या स्थान बताया है ?

उत्तर— अपने अंर्तमन में।

(घ) ''कौने क्रिया कर्म में'' वाक्य में कौन-सा अलंकार है ?

उत्तर— अनुप्रास।

(ङ) ''स्वॉसी की स्वॉस'' से क्या अभिप्राय है ?

उत्तर— हर जगह, हर प्राणी का हृदय।

3. खा खाकर कुछ पायेगा नहीं,
न खाकर बनेगा अहंकारी
सम खा तभी होगा समभावी,
खुलेगी सॉकल बंद द्वार की

(क) खा खाकर से क्या तात्पर्य है ?

उत्तर— भोग, उपभोग में लगे रहना।

(ख) समभावी किसे कहा गया है ?

उत्तर— जो भोग एवं त्याग के बीच मार्ग अपनाता है।

(ग) बंद द्वार की सॉकल खुलने से क्या होगा ?

उत्तर— प्रभु प्रेम प्राप्त होगा। साधक का मन भक्ति में रमेंगा।

बदल दिया और उन्हें पक्षी प्रेमी बना दिया।

2. सलिम अली ने पूर्व प्रधानमंत्री के सामने पर्यावरण से संबंधित किन संभावित खतरों का चित्र खींचा होगा कि जिससे उनकी आंखों नम हो गई थीं ?

उत्तर—सलिम अली ने उन्हें बताया होगा कि पर्यावरण में आ रहे बदलाव के कारण अनेक पक्षी लुप्त होने के कगार पर हैं। भविष्य में हम इनमें से अनेक दुर्लभ पक्षियों को देख नहीं सकेंगे। गाँव की खेती भी उससे प्रभावित होगी। यह सुनकर चौधरी चरण सिंह के आँखों में पानी आ गया होगा।

3. लॉरेंस की पत्नी फ्रीड़ा ने ऐसा क्यों कहा होगा कि मेरी छत पर बैठने वाली गौरेया लॉरेंस के बारे में ढेर सारी बातें जानती हैं ?

उत्तर—लॉरेंस की पत्नी ने ऐसा इसलिए कहा होगा क्योंकि लॉरेंस प्रकृति प्रेमी थे और प्रकृति को सजीव मानकर उनसे सीधे जुड़े होंगे। वे अक्सर पक्षियों की दुनिया में जाकर उनका अवलोकन करते होंगे।

4. आशय स्पष्ट कीजिए—

कोई अपने जिस्म की हरारत और दिल की धड़कन देकर भी उसे लौटाना चाहे तो वह पक्षी अपने सपनों के गीत दोबारा कैसे गा सकेगा ?

उत्तर—इसका आशय यह है कि सलिम अली पक्षियों की दुनिया छोड़कर जा चुके हैं। उनका निधन हो चुका है इसलिए कोई उन्हें शरीर की गर्मी और धड़कन देकर जीवत करना चाहे तो यह असंभव है।

5. सलिम अली और डी एच लॉरेंस में क्या समानता थी ?

उत्तर—सलिम अली पक्षी विज्ञानी थे और डी एच लॉरेंस कवि और उपन्यासकार थे। वे दोनों प्रकृति प्रेमी थे। उनका प्रकृति से गहरा लगाव तथासंबंध था। दोनों प्रकृति की सुरक्षा करके मानव जीवन को बचाना चाहते थे। दोनों को पक्षियों से लगाव था तथा वे उनको लुप्त होने से बचाना चाहते थे।

काव्यांश आधारित प्रश्न

प्रश्न 1. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. हिंदु मूआ राम कहित मुसलमान खुदाई।
   कहै कबीर सो जीवता, जो दुहु के निकट न जाई।

(क) कबीर के अनुसार जीवित कौन है ?

उत्तर—कबीर के अनुसार साम्प्रदायिक भेदभाव और कट्टरता से दूर रहने वाले मनुष्य ही जीवित है।

(ख) कबीर ने किनको मरे हुए व्यक्तियों के समान माना है ?

उत्तर— कबीर ने हिंदू और मुसलमान के नाम पर कटट्र बने लोगों को मरे हुए के समान माना है।

(ग) कबीर किस प्रकार का मनुष्य चाहते हैं ?

उत्तर—लेखक ने उपभोक्ता संस्कृति को हमारे समाज के लिए चुनौती इसलिए कहा है क्योंकि हमारी सांस्कृतिक अस्मिता का ह्रास तो हो ही रहा है, हम लक्ष्य भ्रम से भी पीड़ित हैं विकास के विराट उद्देश्य पीछे हट रहे हैं। हमारी सांस्कृतिक अस्मिताका ह्रास तो होही रहा है हम लक्ष्य भ्रम से भी पीड़ित हैं विकास के विराट उद्देश्य पीछे हट रहे हैं हम झूठी तृष्टि के तात्कालिक लक्ष्यों का पीछा कर रहे हैं। मर्यादाएँ टूट रही हैं, स्वार्थ परमार्थ पर हावी हो रहा हैं। भोग की आकाक्षाएँ आसमान को छू रही है।

4. आशय स्पष्ट कीजिए।

1. जाने अनजाने आज के माहौल में आपका चरित्र भी बदल रहा है ओर आप उत्पाद को समर्पित होते जा रहे हैं।

उत्तर—आज के परिवेश में हम सबके चरित्र पर उपभोक्तावादी संस्कृति का प्रभाव बढ़ता जा रहा है और हम बाजार में उपलब्ध वस्तुओं पर निर्भर करने लगे हैं। जैसे कुछ वर्ष पहले मोबाईल कुछ अमीरों के लिए उपयोगी मानी जाती थी। पर अब सब मोबाईल के बिना स्वयं को अधूरा महसूस करते हैं।

2. प्रतिष्ठा के अनेक रूप होते हैं चाहे वे हास्यास्पद ही क्यों न हो।

उत्तर—उपभोक्तावादी समाज में झठी शान की खातिर कुछ लोग मजाक का पात्र बनने लगे हैं। अमेरिका और यूप के कुछ देशों में आप मरने के पहले ही अपने अंतिम संस्का और अनंत विश्राम का प्रबंध भी एक कीमत पर कर लेते हैं। आपकी कब्र के आसपास सदा हरी घास होगी। चाहें तो फव्वारे होंगे और मंद ध्वनि में निंरतर संगीत भी कल भारत में भी यह संभव हो सकता है। अमेरिका में आज जो हो रहा है कल वह भारत में भी आ सकता है।

3. आपके अनुसार वस्तुओं को खरीदने का आधार वस्तु की गुणवता होनी चाहिए या उसका विज्ञापन ? तर्क देकर स्पष्ट करें।

उत्तर—वस्तुओं को खरीदने का आधार वस्तु की गुणवत्ता होनी चाहिए। न कि उसका विज्ञापन क्योंकि विज्ञापनों में किसी वस्तु को बढ़ा चढ़ाकर पेश किया जाता है। विज्ञापन में झूठे दावे किए जाते हैं।

साँवल सपनों की याद

1. किस घटना ने सलिम अली की जीवन की दिशा को बदल दिया और उन्हें पक्षी प्रेमी बना दिया ?

उत्तर—बचपन के दिनों में, उनकी एयागन से घायल होकर गिरने वाली नीलकंठ की वह गौरेया सारी जिंदगी उन्हें खोज के नए-नए रास्तों की तफ ले जाती रहीं इस घटना ने सलिम अली के जीवन की दिशा को

उत्तर—लेखक को यह बात अच्छी लगी कि तिब्बत में भारत की तरह जाति प्रथा छुआछूत परदा प्रथा आदि बुराई नहीं थी। इसलिए किसी के यहां आसानी से प्रवेश कर सकते थे। और चाय आदि बनवा सकते थे।

2. तिब्बत में सबसे खतरनाक जगह कौन-सी है और क्यों ?

उत्तर— तिब्बत में सबसे खतरनाक स्थान डॉड़े है। सोलह सत्रह हजार फीट ऊँचे स्थान होने के कारण दूर तक कोई गाँव नहीं होता इसलिए डाकुओं का भय बना रहता है।

3. तिब्बत में हथियारों का कानून न होने के कारण यात्रियों को किस प्रकार का भय रहता है ?

उत्तर—तिब्बत में हथियारों का कानून न होने के कारण लोग पिस्तॉल बंदूक को लाठी की तरह लेकर फिरते हैं इसलिए यात्रियों को जान का खतरा बना रहता है।

4. लेखक लडकोर के मार्ग में किस कारण पिछड़ गया ?

उत्तर—लेखक लडकोर के मार्ग में पिछड़ गया क्योंकि वह जिस घोड़े की सवारी कर रहा था वह धीमा था और एक स्थान पर वे दूसरे रास्ते चले गये तब उन्हें लौटना पड़ा।

5. लेखक ने शेकर बिहार में यजमान के पास सुमति को जाने से रोका परंतु दूसरी बार रोकने का प्रयास क्यों नहीं किया ?

उत्तर—लेखक ने दूसरी बार सुमति को रोकने का प्रयास नहीं किया क्योंकि बुद्धवचन के अनुपाद की हस्तलिखित 103 पोथियां पढ़ने में व्यस्त होगये ं लेखक एकांत में उन ग्रंथों का पढ़ना चाहते थे।

उपभोक्तावादी की संस्कृति

1. लेखक के अनुसार जीवन में सुख से क्या अभिप्राय है ?

उत्तर—लेखक के अनुसार सुख की व्याख्या बदल गई है। उपभोग भोग ही सुख माना जाने लगा है। जीवन में सुख पाने का मतलबहै बाजार में प्रचारित वस्तुओं का अधिक से अधिक उपयोग करना माना जाने लगा है।

2. आज की उपभोक्तावादी संस्कृति हमारे दैनिक जीवन को किस प्रकार प्रभावित कर रही है ?

उत्तर—आज की उपभोक्तावादी संस्कृति हमारे दैनिक जीवन को अनेक प्रकार से प्रभावित कर रही है। जैसे विज्ञापन में प्रचारित वस्तुओं का अधिक से अधिक प्रयोग करने लगे हैं। हम गुणवत्ता को अनदेखा कर कूड़ा खाद्य खाने लगे हैं। प्रसाधन सामग्रियों का इस्तेमाल बढ़ गया है। उपभोक्तावादी समाज के अनुरूप हम फैशनपरस्त बन गये हैं।

3. लेखक ने उपभोक्ता संस्कृति को हमारे समाज के लिए चुनौती क्यों कहा है ?

से स्त्री के प्रति प्रेमचंद के दृष्टिकोण को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—प्रेमचंद नारी के प्रति सम्मानजनक व्यवहार के पक्षधर थे। वे उनके विरूद्ध हिंसा को अनुचित मानते थे। हमारे देश में प्राचीनकाल नारी को सम्मानीय माना जाता रहा है इसलिए उनपर जुल्म करना या उन्हें कठोर दण्ड देने के खिलाफ थे।

7. **किसान जीवन वाले समाज में पशु और मुनष्य के आपसी संबंधों को कहानी में किस तरह व्यक्त किया गया है ?**

उत्तर—इस कहानी में बताया गया है कि किसानों का अपने पालतू पशुओं से भावनात्मक संबंध होता है। झुरी अपने बैलों को अपने पुत्रों की भांति स्नेह करता था और उन्हें फूल की छड़ी से भी न छूता था। बैल भी अपने स्वामी के प्रति पूरी निष्ठा रखते हैं औ उसके लिए कड़ा परिश्रम करने सदा तैयार थे।

8. **इतना तो हो ही गया कि नौदस प्राणियों की जान बच गई वे सब तो आशीर्वाद देंगें। मोती के इस कथन के आलोक में उसकी विशेषताएँ बताइए।**

उत्तर—मोती उग्र व क्रांतिकारी प्रकृति का बैल था। कांजीहौंस में उसके प्रयास से वहाँ कैद अन्य पशुओं को आजादी मिल गई किन्तु हीरा के गले में रस्सी पड़ी होने के कारण वे स्वयं आजाद न हो सके। इतना होने पर भी उन्हें इसबात का संतोष है कि उसके प्रयत्नों से दूसरे जीवों को आजादी मिल गई। मोती के इस कथन से उसके एक निस्वार्थ क्रांतिकारी स्वभाव का पता चलता है जिसे स्वयं की आजादी से महत्त्वपूर्ण है अपनी जाति और समुदाय की मुक्ति।

9. **आशय स्पष्ट कीजए।**

(क) अवश्य ही उनमें कोई ऐसा गुप्त शक्ति थी, जिससे जीवों में श्रेष्ठता का दावा करनेवाला मनुष्य वंचित है।

उत्तर—मनुष्य स्वयं को सर्वश्रेष्ठ प्राणी कहता है किन्तु उसके पास वह गुप्त शक्ति नहीं है कि अन्य प्राणियों की तरह दूसरे प्राणी के मन की बात जान ले। मनुष्य विचार विनियम के लिए भाषा या बोली पर आश्रित है। गाय बैलों की भांति वह मूक भाषा में बातचीत नहीं कर सकता।

(ख) उस एक रोटी से उनकी भूख तो क्या शांत होती पर दोनों के हृदय को मानो भोजन मिल गया।

उत्तर— छोटी बालिका ने जब जुल्म के शिकार हीरा मोती को एक एक रोटी खिलाया तो उनकी भूख शांत नहीं हुई प दोनों के हृदय को इस बात की संतुष्टि मिली कि उस घर में कोई तो है जिसे उनकी परवाह है और जिनके मन में उनके लिए स्नेह है।

ल्हासा की ओर

1. **तिब्बत की कौन-कौन सी बातें लेखक को अच्छी लगी ?**

1. कांजीहौस में कैदी पशुओं की हाजिरी क्यों ली जाती होगी ?

उत्तर— कांजीहौस में कैदी पशुओं की हाजिरी इसलिए ली जाती होगी ताकि कैदी पशु की वास्तविक संख्या का पता चल सके और पता लगाया जा सके कि उनमें से कोई भाग तो नहीं गया या मर तो नहीं गया।

2. छोटी बच्ची को बैलों के प्रति प्रेम क्यों उमड़ आया ?

उत्तर—बैलों के समान छोटी बच्ची भी जुल्म का शिकार थी इसलिए उसके मन में उनके लिएदया उमड़ पड़ी। उसकी सौतेली माता उसके प्रति कठोर बर्ताव करती थी। अत: उस कोमल मन की बालिका ने जब गाय को हीरा मोती पर अत्याचार करते देखा तो उसका मन पसीज गया।

3. कहानी में बैलों के माध्यम से कौन-कौन से नीति विषयक मूल्य उभर कर आए हैं ?

उत्तर— कहानी में बैलों के माध्यम से निम्नलिखित नीति विषयक मूल्य उभर कर आए हैं।

1. विपत्ति के समय हमेशा मित्र की सहायता करना चाहिए।
2. अपनी आजादी के लिए हमेशा सजग वह संघर्षशील रहना चाहिए।
3. किसी की आजादी नहीं छीनना चाहिए।
4. अपने समुदाय के हित के लिए अपने हितों का त्याग करने के लिए तैयार रहना चाहिए।
5. पशु पक्षियों के प्रति दया का बर्ताव करना चाहिए।
6. स्त्रियों का बच्चों के प्रति सम्मानजनक बतार्व करना चाहिए।

4. कहानी में प्रेमचंद ने गधे की किन स्वभागत विशेषताओं के आधार पर उसके प्रति रूढ अर्थ मूर्ख का प्रयोग न कर किस एनए अर्थ की ओर संकेत किया है ?

उत्तर—प्रेमचंद ने गधे की सहनशीलता सीधेपन कमी क्रोध न करने, हानि लाभ सुखदुख में समान रहने, आदि गुणों के आधार पर उसे बेवकूफ के स्थान पर संत स्वभाव का प्राणी करार दिया है जो बहुत अधिक सीधेपन के कारण सम्मान का पात्र नहीं समझा जाता।

5. किन घटनाओं से पता चलता है कि हीरा और मोती में गहरी दोस्ती थी ?

उत्तर— पहली घटना मटर की खेत की थी। जब मोती मटर खाने खेत में घुसा और इसी बीच खेत के रखवालों ने उसे घेर लिया। पैर कीचड़ में फंस जाने से वह भाग न सका। और पकड़ लिया गया। मित्र को मुसीबत में छोड़कर हीरा नहीं भागा और वापस आ गया। उसे भी पकड़ लिया गया। दूसरी घटना कांजीहौंस की थी जब मोती के प्रयासों से काजी हौंस की दीवार टुट गयी और वहां कैद पशुओं को आजादी मिल गयी पर हीरा के बंधन न टूटने के कारण मोती से छोड़कर नहीं गया। इस तरह दोनों मित्रों ने मुसीबत में सच्ची मित्रता का परिचय दिया।

6. लेकिन औरत जात पर सींग चलाना मना है, यह भूल जाते हो।' हीरा के इस कथन के माध्यम

(ख) वे समुद्र यात्रा करते रहे ।

(ग) वे सदा प्रकृति से निकट संबंध बनाये रहे ।

(घ) उपरोक्त में से कोई नहीं ।

(iii) भ्रमणशल स्वभाव और यायावरी का आशय किससे है

(क) तलाशने (ख) घुमने फिरने

(ग) यात्रा करने (घ) उपरोक्त मेंसे कोई नहीं

(iv) सलिम अली किसकी खोज करते रहे?

(क) गौरया की (ख) दुर्लभ पक्षियों की

(ग) मोर की (घ) हाथियों की

(v) इस गद्याश के पाठ के लेखक हैं–

(क) महादेवी वर्मा (ख) प्रेमचंद

(ग) जाकिर हुसैन (घ) जाकिर हुसैन

उत्तर संकेत

दो बैलों की कथा

गद्यांश 1 1. (ग) 2. (ख) 3. (घ) 4. (घ) 5. (ग)

गद्यांश 2 1. (क) 2. (घ) 3. (घ) 4. (ख) 5. (घ)

गद्यांश 13 1. (घ) 2. (ग) 3. (घ) 4. (क) 5. (ख)

ल्हासा की ओर

गद्यांश 1 1. (घ) 2. (ग) 3. (घ) 4. (क) 5. (ख)

उपभोक्तवाद की संस्कृति

गद्यांश 1 1. (ग) 2. (ख) 3. (ख) 4. (घ) 5. (क)

गद्यांश 2 1. (ख) 2. (ग) 3. (क) 4. (घ) 5. (ग)

गद्यांश 3 1. (घ) 2. (घ) 3. (घ) 4. (ग) 5. (ग)

सॉवले सपनों की याद

गद्यांश 1 i. (ख) ii. (घ) iii. (ग) iv. (घ) v. (क)

गद्यांश 2 i. (क) ii. (ग) iii. (ख) iv. (ख) v. (घ)

गद्य पाठ पर आधारित लघुउत्तरीय प्रश्न (अंक 2 × 5)

दो बैलों की कथा

(i) अंतहीन सफर का आशय है

(क) बहुत लंबी यात्रा (ख) मृत्यु के उपरांत अंतिम यात्रा

(ग) जंगलों में भटक जाना (घ) हुजूम में आगे चलना

(ii) सालिम अली का यह आखिरी पलायन कैसे था ?

(क) अपना काम छोड़ रहे थे। (ख) अपना दफ्तार छोड़ के भाग रहे थे।

(ग) विदेश जाकर बस रहे थे। (घ) मौत के आगोश में चले गए।

(iii) सालिम किस वन पक्षी की तरह थे ?

(क) जो बंधनों में रह कर गीत गाता है। (ख) जो पानी में खेलता है।

(ग) जो मुक्त प्रकृति में गीत गाता है। (घ) जो आकाश में ऊँचा उड़ता है

(iv) प्रकृति से सलिम अली का संबंध कैसा थ ?

(क) प्रकृति उनके लिए उपयोग की वस्तु थी।

(ख) वे प्रकृति पर विजय पाना चाहते थे।

(ग) वे प्रकृति का दोहन कर सफल होना चाहते थे।

(घ) वे प्रकृति का आत्मीय हिस्सा बन कर रहते थे।

(v) सपनों के गीत गाना का तात्पर्य है–

(क) अपना पंसदीदा कार्य करना। (ख) नींद में गाने गाना।

(ग) गाने में सपनों का वर्णन करना। (घ) झूठी बातें करना।

2. नैसर्गिक जिंदगी का प्रतिरूप बन गये थे। सलिम अली प्रकृति की दुनिया में एक टापू बनने की बजाए अथाह सागर बनकर उभरे थे। जो लोग उनके भ्रमशील स्वभाव और उनकी यायावरी से परिचित हैं, उन्हें महससू होता है के वे आज भी पक्षियों के सुराग में ही निकले हैं, और बस अभी गले में लंबी दूरबीन लटकाए अपने खोजपूर्ण नीताजों के साथ लौट आएंगे।

जब तक वो नहीं लौटते क्या उन्हें गया हुआ मान लिया जाए।

मेरी आंखें नम हैं सलिम अली, तुम लौटोगे ना !

(i) नैसर्गिक जिंदगी के प्रतिरूप का आशय है–

(क) पक्षियों से प्रेम (ख) प्रकृति से गहरा लगाव रखनेवाले

(ग) सबसे मिलजुल कर रहनेवाले (घ) भ्रमण प्रेमी

(ii) सलिम अली प्रकृति की दुनिया में एक टापू बनने की बजाए अथाह सागर बनकर उमरे थे। इस कथन द्वारा लेखक क्या कहना चाहते हैं।

(क) वे सदा अपनी अलगदुनिया बसाते रहे।

(क) सीमित संसाधनों का घोर अपव्यय

(ख) समाज में वर्गो की दूरी बढ़ना

(ग) व्यक्ति केंद्रकता बढ़ना

(घ) उपरोक्त सभी

2. जीवन की गुणवत्ता किससे नहीं सुधरती

(क) दूध (ख) आलु

(ग) चावल दाल (घ) उपरोक्त सभी

3. कौन से कूड़ा खाद्य आधुनिक समझे जाते हैं ?

(क) दूध (ख) बर्गर

(ग) शीतल पेय (घ) उपरोक्त सभी

4. उपभोक्तावादी संस्कृति के बढ़ने का परिणाम नहीं है

(क) विकास के विराट उद्देश्य से पीछे हटना

(ख) स्वार्थ परमार्थ पर हावी होना

(ग) नैतिक मानदंड कड़े होना

(घ) लक्ष्य भ्रम से पीड़ित होना

5. क्या आवेश और अशांति को जन्म दे रहा है ?

(क) शिक्षा में अंतर (ख) खान पान का अंतर

(ग) जीवन स्तर का बढ़ता अंतर (घ) विकास का वर्तमान स्वरूप

साँवले सपनों की याद

इस हुजुम में आगे आगे चल रहे हैं, सालिम अली । अपने कंधेपर सैलानियों की तरह अपने अंतहीन सफर को बोझ उठाए । लेकिन यह सफर पिछले तमाम सफरों से भिन्न है । भीड़ भाड़ की जिंदगी और तनाव के माहौल से सालिम अली का यह आखिरी पलायन है । अब तो वो उस वन पक्षी की तरह प्रकृति में विलीन हो रहेहैं, जो जिंदगी को आखिरी गीत गाने के बाद मौत की गोद में जा बसा हो । कोई अपने जिस्म की हरारत और दिल की धड़कन देकर भी उसे लौटाना चाहे तो वह पक्षी अपने सपनों के गीत दोबारा कैसे गा सकेगा ।

उपर्युक्त गद्यांश के आधार पर सही विकल्पों का चयन कीजिए ।

हैं। संस्कृति को नियंत्रक शक्तियों के क्षीण हो जाने के कारण हम दिग्भ्रमित हो रहे हैं।

1. उपभोक्तावादी संस्कृति ने हमारी परंपराओं और आस्थाओं को किस प्रकार प्रभावित किया है ?

(क) उनका विकास हुआ है। (ख) उनका अवमूल्यन तथा क्षरण हुआ है।

(ग) उनमें परिवर्तन आया है। (घ) ये यथावत् हैं।

2. बौद्धिक दासता स्वीकार ने का आशय है—

(क) मानसिक गुलामी (ख) दास बन जाना।

(ग) हम पश्चिमी संस्कृति को अपनाते जा रहे हैं। (घ)

अपनी संस्कृति को बचाना।

3. हमारी नई संस्कृति कैसी है ?

(क) अनुकरण की संस्कृति है । (ख) मूल्यों की संस्कृति है।

(ग) सर्वश्रेष्ठ संस्कृति है। (घ) समृद्धशाली संस्कृति है।

4. हम दिग्भ्रमित क्यों हो रहे हैं ?

(क) आधुनिक होने के कारण

(ख) अंध प्रतिस्पर्धा के कारण

(ग) बौद्धिक दासता के कारण

(घ) संस्कृति की नियंत्रक शक्तियों के क्षीण हो जाने के कारण।

5. अस्मिता शब्द का अर्थ है।

(क) आदर (ख) कार्यक्रम

(ग) अस्तित्व (घ) सम्मान

3. इस संस्कृति के फैलाव का परिणाम क्या होगा ? यह गंभीर चिंता का विषय है। हमारे सीमित संसाधनों का घोर अपव्यय हो रहा है। जीवन की गुणवत्ता आलू के चिप्स से नहीं सुधरती। न बहुविज्ञापित शीत पेयों से। भले ही वे अंतर्राष्ट्रीय हों। पीजाऔर बर्गर कितने ही आधुनिक हों, हैं वे कूड़ा खाद्य। समाज में वर्गों की दूरी बढ़ रह है, सामाजिक सरोकारों में कमी आ रही है। जीवन स्तर का यह बढ़ता अंतर आवेश और अशांति को जन्म दे रहा है। जैसे-जैसे दिखावे की यह संस्कृति फैलेगी, सामाजिक अशांति भी बढ़ेगी। हमारी सांस्कृतिक अस्मिता का ह्रास तो हो ही रहा है हम लक्ष्य भ्रम से भी पीड़ित हैं विकास के विराट उद्देश्य पीछे हट रहे हैं हम झूटी तुष्टि के तात्कालिक लक्ष्यों का पीछाकर रहे हैं। मर्यादाएँ टूट रही हैं, स्वार्थ परमार्थ पर हावी हो रहा है। भोग की आकाक्षाएँ असमान को छू रही है।

1. उपभोक्तवादी संस्कृति के फैलाव का परिणाम क्या होगा ?

1. धीरे धीरे सब कुछ बदल रहा है। एक नयी जीवन शैली अपना वर्चस्व स्थापित कर रही है। उसके साथ आ रहा है। एक नया जीवन दर्शन उपभोक्तवाद का दर्शन। उत्पादन बढ़ाने पर जोर है चारों ओर। यह उत्पादन आपके लिए है आपके भोग के लिए है, आपके सुख के लिए है। सुख की व्याख्या बदल गई है। उपभोग भोग ही सुख है। एक सूक्ष्म बदलाव आया है नई स्थिति में। उत्पाद तो आपके लिए है, पर आप यह भूल जाते हैं कि जाने-अनजाने आज के माहौल में आपका चरित्र भी बदल रहा है और आप उत्पाद को समर्पित होते जा रहे हैं।

1. आज किसका प्रभाव बढ़ रहा है।

(क) उत्पादन (ख) बाजार

(ग) उपभोक्तावाद (घ) नयी जीवनशैली

2. उपभोक्तावाद में किस पर बल दिया जा रहा है।

(क) भोग विलासिता पर (ख) उत्पादन बढ़ाने पर

(ग) सुख बढ़ाने पर (घ) चरित्र बदलने पर

3. सुख की वर्तमान परिभाषा क्या है ?

(क) उत्पादन बढ़ाना ही सुख है। (ख) उपभोग भोग ही सुख है।

(ग) दिखावा करने में सुख है। (घ) उपरोक्त सभी

4. उपभोक्तावादी जीवन शैली के कारण क्या बदल रहा है ?

(क) चरित्र (ख) सुख की परिभाषा

(ग) जीवन के प्रति दृष्टिकोण (घ) उपरोक्त सभी

5. इस गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम है ?

(क) उपभोक्तवाद की संस्कृति, श्यामाचरण दुबे

(ख) ल्हासा की ओर, राहुल साकृत्यायन

(ग) साँवले सपनों की याद, जाबिन हुसैन

(घ) नाना साहब की पुत्री देवी मैना को भस्म कर दिया गया, चपला देवी

2. हम सांस्कृतिक अस्मिता की बल कितनी ही करें परंपराओं का अवमूल्यन हुआ है, आस्थाओं का क्षरण हुआ है। कड़वा सच तो यह है कि हम बौद्धिक दासता स्वीकार कर रहे हैं। पश्चिम के सांस्कृतिक उपनिवेश बन रहे हैं। हमारी नई संस्कृति अनुकरण की संस्कृति है। हम आधुनिकता के झूठे प्रतिमान अपनाते जा रहे हैं। अनुकरण की संस्कृति है। हम आधुनिकता के झूठे प्रतिमान अपनाते जा रहे है। प्रतिष्ठा की अंधी प्रतिस्पर्धा में जो अपना है उसे खोकर छद्म आधुनिकता की गिरफ्त में आते जा रहे

में आकर खुन हो जाए, तब तो खूनी को सजा भी मिल सकती है, लेकिन इन निर्जन स्थानों में मरे हुए आदमियों के लिए कोई परवाह नहीं करता। सरकार खुफिया विभाग और पुलिस पर उतना खर्च नहीं करती और वहाँ गवाह भी तो कोई नहीं मिल सकता। डकैत पहले आदमी को मार डाले हैं, उसके बाद देखते हैं कि कुछ पैसा है कि नहीं।

1. डाड़े तिब्बत में सबसे खतरनाक जगहें क्यों हैं ?
   (क) यह सोलह सत्रह हजार फीट की ऊँचाई पर है।
   (ख) यहाँ आस पास नीलों तक कोई गांव नहीं है।
   (ग) डाकुओं के लिए यह सुरक्षित जगह है।
   (घ) उपर्युक्त सभी कथन सत्य है।
2. डाकुओं के लिए डॉडे सबसे अच्छी जगह क्यों है ?
   (क) पुलिस उनसे डरती है।
   (ख) बहुत से यात्री लूटने के लिए मिल जाते हैं।
   (ग) लूट और हत्या का कोई गवाह नहीं मिल पाता।
   (घ) सुनसान जगह हैं।
3. यहाँ खून होने पर खूनी को सजा क्यों मिल पाती ?
   (क) क्योंकि वहाँ जमींदारी प्रथा है।
   (ख) क्योंकि वहाँ कोई न्यायालय नहीं है।
   (ग) खूनी से सब डरते हैं।
   (घ) क्योंकि खून करने वाले के खिलाफ कोई गवाह नहीं होता।
4. डाडे की आवासीय स्थिति कैसी है ?
   (क) यहाँ दूर-दूर तक कोई गाँव नहीं है।
   (ख) यहाँ गाँव बहुत पास-पास है।
   (ग) यहाँ गाँव की आबादी कम है।
   (घ) यहाँ गाँव की सघन आबादी है।
5. निर्जन शब्द में उपसर्ग हैं
   (क) नि (ख) निर
   (ग) नीर (घ) निज

उपभोक्तावाद की संस्कृति

छोड़कर अलग हो जाऊँ ! हीरा ने कहा बहुम मार पड़ेगी । लोग समझ जाएँगें, यह तुम्हारी शरारत है । मोती गर्व से बोला जिस अपराध के लिए तुम्हारे गले में बंधन पड़ा, उसके लिए अगर मुझे मार पड़े तो क्या चिंता । इतना तो हो ही गया कि नौ दस प्राणियों की जान बच गई । वे सब तो आशीर्वाद देंगे ।

1. कांजीहौस से गद्धे क्यों नहीं भागे ?

(क) वे दीवार टूटने से बेखबर थे । (ख) वे वहाँ सुखी थे ।

(ग) वे डरते थे । (घ) वे कायर थे ।

2. रस्सी कौन तोड़ने लगा ?

(क) हीरा (ख) मोती

(ग) गद्धे (घ) उपरोक्तसभी

3. मोती हीरा को छोड़कर क्यों नहीं गया ?

(क) वह कांजीहौंस में रहना चाहता था ।

(ख) उसे हीरा की चिंता थी ।

(ग) वह मित्र को छोड़कर भागना नहीं चाहता था ।

(घ) उसे हीरा ने मना किया था ।

4. मोती ने ऐसा क्यों कहा जिस अपराध के लिए तुम्हारे गले में बंधन पड़ा, उसके लिए अगर मुझ पर मार पड़े, तो क्या चिंता इतना तो हो ही गया कि नौ दस प्राणियों की जान बच गई । वे सब तो आर्शीवाद देंगे ।

(क) उसे अपनी परवाह नहीं थी ।

(ख) वह मार खाने से नहीं डरता था ।

(ग) उसने हार मान लिया था ।

(घ) वह दूसरे की आजादी के लिए सब कष्ट सहने को तैयार थे ।

5. अपराध में किस उपसर्ग का प्रयोग है ?

(क) उप (ख) अप

(ग) अपर (घ)

ल्हासा की ओर

डाड़ तिब्बत में सबसे खतरे की जगहें हैं । सोलह सत्रह हजार फीट की ऊँचाई होने के कारण उनके दोनों तरफ मीलों तक कोई गांव गिराव नहीं होते । नदियों के मोड़ और पहाड़ों के कोनों के कारण बहुत दूर तक आदमी को देखा नहीं जा सकता । डाकुओं के लिए यही सबसे अच्छी जगह है । तिब्बत में गाव

(क) बहुव्रीहि (ख) द्विगु

(ग) द्वंद्व (घ) अव्यवी भाव समास

2. झूरी काछी के दोनों बैलों के नाम थे हीरा और मोती। दोनों पछाइ जाति के थे—देखने में सुंदर, काम में चौकस, डील में ऊँचे। बहुत दिनों साथ रहते दोनों में भाईचारा होना था। दोनों आमने सामने या आस-पास बैठे हुए एक दूसरे से मूक भाषा में विचार विनियम करते थे। एक दूसरे के मन की बात कैसे समझ जाते थे, हम नहीं कह सकते। अवश्य ही उनमें कोई ऐसी गुप्त शक्ति थी, जिससे जीवों में श्रेष्ठता का दावा कने वाला मनुष्य वंचित है। दोनों एक-दूसरे को चाटक और सूघकर अपना प्रेम प्रकट करते, कभी-कभी दोनों सींग भी मिला लिया करते थे विग्रह के नाते से नहीं, केवल विनोद के भाव से, आत्मीयता के भाव से, जैसे दोस्तों में घनिष्ठता होते ही धौल-धप्पा होने लगता है.

1. झूरी काछी कौन था ?

(क) बैलों का मालिक (ख) बैलों का व्यापारी

(ग) बैलों का खरीददार (घ) काजीहाउस का चौकीदार

2. हीरा और मोती कैसे थे ?

(क) दिखने में सुंदर (ख) काम में चौकस

(ग) कद में ऊँचे (घ) उपरोक्त सभी

3. हीरा और मोती की वह कौन-सी विशेषता है जिससे मनुष्य वंचित है—

(क) भाईचारे की भावना (ख) विचार विनिमय का गुण

(ग) कठोर परिश्रम करने की शक्ति (घ) एक दूसरे के मन की बात जान लेना

4. बैल अपना प्रेम कैसे प्रकट करते हैं।

(क) जुगाली करके (ख) चाटकर

(ग) सींग मिलाकर (घ) उपरोक्त सभी

5. विग्रह का अर्थ है—

(क) मजाक (ख) प्रेम

(ग) दोस्ती (घ) झगड़ा

3. आधी रात से ऊपर जा चुकी थी। दोनों गद्ये अभी तक खड़े सोच रहे थे कि भागें या न भागें, और मोती अपने मित्रों की रस्सी तोड़ने में लगा हुआ था। जब वह हार गया, तो हीरा ने कहा तुम जाओ, मुझ यही पड़ा रहने दो। शायद कहीं भेंट हो जाए। मोती ने आंखों में आंसू लाकर कहा तुम मुझे इतना स्वार्थी समझते हो, हीरा ? हम और तुम इतने दिनों एक साथ रहे हैं। आज तुम विपत्ति में पड़ गए, तो मैं तुम्हें

खंड-ग

पाठ्यपुस्तक

गद्यांश आधारित प्रश्न (अंक–5)

दो बैलों की कथा

1. कुत्ता भी बहुत गरीब जानवर है, लेकिन कभी-कभी उसे भी क्रोध आ ही जाता है किंतु गधे को कभी क्रोध करते नहीं सुना,न देखा । जितना चाही गरीब को मारो, चाहा जैसी खराब, सड़ी हुई घास सामने डाल दे । उसके चेहरे पर कभी असंतोष की छाया भी न दिखाई देगी । वैशाख में चाहे एकाध बार कुलेल कर लेता हो पर हमने तो उसे कभी खुश होते नहीं देखा । उसके चेहरे पर एक विषाद स्थायी रूप से छाया रहता है । सुख-दुखहानि लाभ, किसी भी दशा में उसे बदलते नहीं देखा । ऋषि मुनियों के जितने गुण हैं वे सभी उसमें पराकाष्ठा को पहुँच गए हैं पर आदमी उसे बेवकूफ कहता है । सद्‌गुणों का इतना अनादर कही नहीं देखा ।

1. कुत्ते को गरीब जानवर कहा गया क्योंकि—

   (क) वह बहुत कमजोर प्राणी है । (ख) वह बहुत निर्धन पशु है ।

   (ग) वह दया का पात्र है । (घ) उपरोक्त सभी

2. गद्धे क्या नहीं करते ?

   (क) चुपचाप मार खाना (ख) असंतोष प्रकट करना

   (ग) खुश होना (घ) जो मिले उसे खा लेना

3. किसके चेहरे पर सदा उदासी छाई रहती है ?

   (क) कुत्ता (ख) बैल

   (ग) सांड (घ) गधा

4. सुख-दुख हानि लाभ में कौन नहीं बदलते है ?

   (क) ऋषि मुनि (ख) साधु

   (ग) गधे (घ) उपरोक्त सभी

5. सुख-दुख में कौन-सा समास है ?

राणा ने सोचा इस पार, तब तक चेतक था उस पार ।।

स्पष्टीकरण—सोचतें ही घो़डे द्वारा नहीं को पार करना अतिशयोक्ति है ।

5. **मानवीकरण**—जहाँ मानवेतर प्राणियों या जड़ पदार्थो पर मानवीय भावनाओं का आरोप होता है, वहाँ मानवीकरण अलंकार होता है ।

जैसे—मेघ आए बड़े बन-ठन के संवर के ।

आए महंत बसंत ।

प्रश्न—अभ्यास

निम्नलिखित काव्यांशों में प्रयुक्त अलंकार का नाम लिखिए–

1. संसार की समर—स्थली में धीरता धारण करो ।
2. माला फेरत जुग गया फिरा न मन का फेर ।
   कर का मन का डारि के, मन का मनका फेर ।।
3. पीपर पात सरिस मन डोला ।
4. एक राम घनश्याम हित चातक तुलसीदास ।
5. लो यह लतिका भी भर लाई
   मधु मुकुल नवल रस गागरी ।
6. ले चला साथ में तुझे कनक ज्यों भिक्षु लेकर स्वर्ण-झनक ।
7. हनुमान की पूँछ में लगन न पाई आग ।
   लंका सगरी जल गई, गए निशाचर भाग ।।
8. मेरी भव-बाधा हरौ राधा नागरि सोय ।
   जा तन की झाँई परै स्यामु हरित दुति होय ।।

है । उदाहरणतया—

मधुबन की छाती देखे ।

सूखी कितनी इसकी कलियाँ

(कलियाँ 1. खिलने से पूर्व फूल की दशा, 2. यौवन से पूर्व की अवस्था)

2. अर्थालंकार :—अर्थो में पाए जाने वाले चमत्कार निम्नांकित है—

1. उपमा—जब किसी वस्तु या व्यक्ति की विशेषता दर्शान के लिए उसकी समानता उस गुण में बढ़ी हुई किसी अन्य वस्तु या व्यक्ति से की जाती है, वहाँ उपमा अलंकार होता है ।

जैसे—सीता का मुख चंद्रमा के समान सुंदर है ।

यहाँ सीता का मुख सुंदरता में चंद्रमा के समान दिखाया गया है । अत: उपमा अंलकार है ।

उपमा के अंग—उपमा के निम्नलिखित चार अंग होते हैं—

उपमेय—जिस व्यक्ति या वस्तु की समानता की जाती है, उसे उपमेय कहते हैं । जैसे—उपर्युक्त उदाहरण में 'सीता' उपमेय है ।

उपमान—जिस प्रसिद्ध वस्तु या व्यक्ति से उपमेय की समनता की जाती है, उसे उपमान कहते हैं । जैसे—उपर्युक्त उदाहरण में 'चंद्रमा' उपमान है ।

समानधर्म—उपमेय और उपमान में जो गुण समान पाया जाता है या जिस सामान्य गुण की समानता की जाती है, उसे समान धर्म कहते हैं । जैसे—'सुंदर' समान धर्म है ।

वाचक धर्म—जिस शब्द विशेष से समानता या उपमा का बोध होता है, उसे वाचकशब्द कहते हैं । उदाहरणतया—'के समान' वाचक शब्द है ।

3. रूपक—जहाँ गुण की अत्यंत समानता के कारण उपेय में उपमान का अभेद आरोपण हो । जैसे—उपमेय—चरण, उपमान—कमल ।

3. उत्प्रेक्षा—जहाँ उपमेय और उपमान की समानता के कारण उपमेय में उपमान की संभावना या कल्पना कीजाए, वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है । इसके वाचक शब्द हैं—मन, मानो, जनु, जहु, जानो मनहु आदि ।

उदाहरणतया—पाहुन ज्यों आए हों गाँव में शहर के ।

मेघ आए बड़े बन-ठन के संवर के ।।

4. अतिशयोक्ति—जहाँ किसी गुण या स्थिति का बढ़ा चढ़कार वर्णन किया जाए, वहाँ अतिशयोक्ति अलंकार होता है ।

जैसे—आगे नदिया पड़ी अपार, घोड़ा कैसे उतरे पार ।

एक ही वाक्य का रूपातंरण हम अर्थ के भेद के अनुसार आठों प्रकार के वाक्यों में कर सकते हैं। एक उदाहरण द्वारा इसे स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है—

सुमन बहुत अच्छा पत्र लिखती है।—विधानवाचक

सुमन बहुत अच्छ पत्र नहीं लिखती है।—निषेधवाचक

क्या सुमन बहुत अच्छा पत्र लिखती है ?—प्रश्नवाचक

यदि मैं कहता तो सुमन बहुत अच्छा पत्र लिखती।—संकेतवाचक

संभवतः सुमन सुमन बहुत अच्छा पत्र लिखती।—संदेहवाचक

मेरी इच्छा है कि सुमन बहुत अच्छा पत्र लिखें।—इच्छासूचक

सुमन, बहुत अच्छा पत्र लिखो।—आज्ञासूचक

अरे! इतना अच्छा पत्र सुमन ने लिखा है।—विस्मयादिबोधक

अलंकार

अलंकार का परिचय—आभूषण या श्रृंगार/काव्य का सौन्दर्यमूलक अलंकार है।

अलंकारों के योग से काव्य मनोहारी बन जाता है।

अलंकार के दो भेद हैं—

(1) शब्दालंकार (2) अर्थालंकार

1. शब्दालंकार शब्दों में चमत्कार।
2. अर्थालंकार काव्य भाषा में अर्थ में चमत्कार।

1. शब्दालंकार—शब्दों में पाए जानेवाले चमत्कार निम्नांकित हैं—

1. अनुप्रास—जहाँ व्यंजनों की आवृत्ति के कारण काव्य में चमत्कार उत्पन्न होता है, वहाँ अनुप्रास अंलकार होता है।

उदाहरणतया—

1. तरनि तनूजा तट तमाल तरूवर बहु छाए। (त वर्ण की आवृत्ति)

2. यमक—''वहै शब्द पुनि-पुनि परै अर्थ भिन्न ही भिन्न।''

अर्थात् जहाँ एक शब्द बार-बार आए किन्तु उसका अर्थ बदल जाए, वहाँ यमक अलंकार होता है। उदाहरणतया—काली घटा का घमंड घटा।

यहाँ 'घटा' शब्द दोनों भिन्न-भिन्न अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। पहली बार बादलों के जमघट के लए तथा दूसरी बार 'कम हुआ' के लिए। अतः यहाँ यमक अलंकार है।

2. श्लेष—जहाँ एक ही शब्द के एक से अधिक अर्थ निकलते हों वहाँ श्लेष अलंकार होता

प्रकट होता है, उसे विस्मयाविदबोधक वाक्य कहते हैं। इसका दूसरा नाम उद्‌गारवाचक वाक्य भी है। इस प्रकार के वाक्यों के अंत में विस्मयादिबोधक चिह्न (!) लगा होता है इनकी पहचान अहा, आह, ओह, अफसोस, छि:, वाह, अरे, शाबाश आदि देखकर की जा सकती है। विस्मयादिबोधक चिह्न का प्रयोग प्राय: इन शब्दों के बाद किया जाता है; जैसे—

अहा! यह पहाड़ी दृश्य कितना मनोरम है।

अरे ! यह सुंदर स्वेटर तुमने बुना है।

वाह ! डेविड मिलर ने क्या शानदार बल्लेबाजी की, जो हारते मैच को जिता गया।

हाय ! चोरों ने सारा घर साफ कर दिया।

अफसोस! गोदाम में लगी आग से सारा माल जलकर राख हो गया।

7. **संदेहवाचक वाक्य**—जिस वाक्य में काम पूरा होने में संदेह होने का भाव प्रकट होता है, उसे संदेहवाचक वाक्य कहते हैं। शायद, संभवत: शब्द देखकर इनकी पहचान की जा सकती है। इसके अलावा वाक्य के अंत में चुका होगा, चुकी होगी जैसे शब्दों को देखकर इन्हें पहचाना जा सकता है; जैसे—

काव्या चित्र में रंग भर चुकी होगी।

संभवत: इस साल अच्छी वर्षा हो।

शायद इस महीने से इस पुल का उद्‌घाटन कर दिया जाएगा।

अब तक तो मनीऑडर पहुँच चुका होगा।

सुमन ने स्वेटर पूरा बुन लिया होगा।

8. **संकेतवाचक वाक्य**—जिस वाक्य में एक क्रिया का होना दूसरी क्रिया पर निर्भर करता है या जिस वाक्य में कार्य किसी गर्त के पूरा होने के बाद ही हो, उसे संकेतवाचक वाक्य कहते हैं। इन वाक्यों के शुरू में अगर, यदि आदि लगे होते हैं, जिससे इन्हें से पहचाना जा सकता है। जैसे—

यदि पेड़ों को कटने से रोका जाता तो प्रदूषण इतना न बढ़ता।

यदि बाढ़ न आती तो फसलें नष्ट न होतीं।

अगर लोग यूँ ही जल की बर्बादी करते रहे तो पीने के लिए पानी भी न मिल पाएगा।

यदि पहले से परिश्रम करते तो सफलता अवश्य मिलती।

अगर अच्छे कर्म करोगें तो समाज में सम्मान पाओगे।

वाक्य रूपातंरण—वाक्य के कर्त्ता, कर्म और क्रिया को बदले बिना एक प्रकार से वाक्य से दूसरे प्रकार के वाक्य में बदलना वाक्य रूपातंरण कहलाता है।

जैसे—

प्रभात प्रतिदिन विद्यालय नहीं जाता है ।

मजदूर ने परिश्रम पूर्वक काम नहीं किया ।

बहुत से अधिकारी ईमानदार नहीं होते हैं ।

चार दिन से लगातार वर्षा नहीं हो रही है ।

3. **प्रश्नवाचक वाक्य**—जिस वाक्य के माध्यमसे कुछ पूछा जाता है तथा जिसके मूल से जिज्ञासा का भाव रहता है, उसे प्रश्नवाचक कहते हैं । इसमें क्या, कब, कहाँ, कैसे, कौन, क्यों किसका, किसकी, किसके, किनका आदि प्रश्नवाचक शब्दों का प्रयोग प्रश्न पूछने के लिए किया जाता है । इस प्रकार के वाक्यों के अंत में प्रश्नवाचक चिह्न (?) का प्रयोग अवश्य होता है, जैसे—

प्रभात प्रतिदिन विद्यालय कैसे जाता है ?

मजदूर ने परिश्रम पूर्वक कहाँ काम नहीं किया ?

क्या बहुत से अधिकारी ईमानदार नहीं होते हैं ?

चार दिन से लगातार वर्षा कहाँ हो रही है ?

4. **आज्ञात्मक वाक्य**—जिस वाक्य में आज्ञा या अनुमति देने अथवा लेने का भाव प्रकट होता है, उसे आज्ञावाचक वाक्य कहते हैं । ऐसे वाक्यों को विधिवाचक या आज्ञासूचक वाक्य भी कहा जाता है । जैसे—

प्रभात प्रतिदिन विद्यालय जाओ ।

अधिकारीगण, अपने काम में ईमानदारी दिखाओ ।

मजदूरों, परिश्रमपूर्वक काम शीघ्र पूरा करो ।

सुमन, कृपया मेरे लिए एक नया स्वेटर बुन दो ।

5. **इच्छावाचक वाक्य**—जिस वाक्य में कर्त्ता की आकांक्षा, इच्छा, कामना या आशीर्वाद का भाव प्रकट होता है, इसे इच्छावाचक वाक्य कहते हैं ।

जैसे—

ईश्वर करे, आपकी यात्रा मंगलमय हो ।

आपको नववर्ष की बहुत-बहुत बधाइयाँ ।

हम दोनों की इच्छा है कि हम साथ-साथ रहें ।

ईश्वर अच्छे काम करने के लिए सभी को सद्‌बुद्धि दे ।

6. **विस्मयादिबोधक वाक्य**—जिस वाक्य से विस्मय, भय, हर्ष, दुख, शोक, घृणा आदि का भाव

(ग) बहुव्रीहि समास (घ) अव्ययीभाव समास

6. चंद्रशेखर

(क) अव्यवीभाव समास (ख) तत्पुरूष समास

(ग) बहुव्रीहि समास (घ) कर्मधारय समास

7. पाप-पुण्य

(क) द्वंद्व समास (ख) बहुव्रीहि समास

(ग) द्विगु समास (घ) कर्मधारय समास

उत्तरमाला

(क) 1. (क) 2. (ख) 3. (क) 4. (ख) 5. (ग)

(ख) 1. (ग) 2. (ख) 3. (घ) 4. (क) 5. (घ) 6. (ग) 7. (क)

वाक्य के भेद

वाक्य अनेक प्रकार के होते हैं। इनके भेदों का निर्धारण मुख्य रूप से दो आधार पर किया जाता है—

वाक्य के भेद

अर्थ के आधार पर वाक्य भेद रचना के आधार पर वाक्य भेद

अर्थ के आधार पर वाक्य भेद—वाक्य में किस प्रकार के अर्थ का बोध हो रहा है, उसके आधार पर जब वाक्यों को वर्गीकृत किया जाता है तो उसे अर्थ के आधार पर वाक्य-भेद कहते हैं। इसके अंतर्गत वाक्यों को आठ भागों में बाँटा गया है—

1. **विधानवाचक वाक्य**—जिस वाक्य से कार्य होने की निश्चित सूचना मिलती है, उसे विधानवाचक वाक्य कहते हैं। इस प्रकार के वाक्यों में कही गई बात को ज्यों-का त्यों स्वीकार कर लिया जाता है, चाहे वह सत्य हो या असत्य। इसे सकारात्मक वाक्य के नाम से भी जाना जाता है, जैसे—

   प्रभात प्रतिदिन विद्यालय जाता है।
   मजदूर ने परिश्रम पूर्वक काम किया।
   बहुत से अधिकारी ईमानदार होते हैं।
   चार दिन से लगातार वर्षा हो रही है।

2. **निषेधवाचक वाक्य**—जिस वाक्य से काम न करने या न होने का भाव प्रकट होता है, उसे निषेध नात्मक वाक्य कहते हैं। इन वाक्यों में 'नहीं' 'मत' 'न' लगा रहता है। इन वाक्यों को निषेधात्मक या नकारात्मक वाक्य के नाम से भी जाना जाता हैं।

(क) चार मासों का समाहार — द्विगु समास

(ख) चार हैं जो मास — कर्मधारय समास

(ग) चार हैं मास जिसमें — बहुव्रीहि समास

(घ) चार ओर मास — द्वंद्व समास

(iv) मुरलीधर

(क) मुरली का धारी — तत्पुरूष समास

(ख) मुरली धारण की है जिसने — बहुव्रीहि समास

(ग) मुरली और धर — द्वंद्व समास

(घ) मुरली है जो धर — कर्मधारय समास

(v) पाठशाला

(क) पाठ और शाला — द्वंद्व समास

(ख) पाठ है जो शाला — कर्मधारय समास

(ग) पाठ के लिए शाला — तत्पुरूष समास

(घ) पाठ है जिसका शाला — बहुव्रीहि समास

(ख)निम्नलिखित पदों में कौन-सा समास है—

1. आजीवन

(क) तत्पुरूष समास (ख) द्विगु समास

(ग) अव्ययवी भाव (घ) कर्मधारय समास

2. देशप्रेम

(क) अव्ययवीभाव समास (ख) तत्पुरूष समास

(ग) द्विगु समास (घ) द्वंद्व समास

3. नीलगगन

(क) द्वंद्व समास (ख) बहुव्रीहि समास

(ग) अव्ययवी भाव समास (घ) कर्मधारय समास

4. रूपलता

(क) कर्मधारय समास (ख) तत्पुरूष समास

(ग) बहुव्रीहि समास (घ) अव्ययवीभाव समास

5. यथारूचि

(क) कर्मधारय समास (ख) तत्पुरूष समास

नीलकंट	नीलाहै कंठ जिसका अर्थात शिव
सुलोचना	सुंदर है लोचन जिसके अर्थात् मेघनाद की पत्नी
पीतांबर	पीले हैं अम्बर जिसके अर्थात् श्रीकृष्ण
लंबोदर	लंबा है उदर जिसका अर्थात् गणेशजी
दुरात्मा	बुरी आत्मा वाला (कोई दुष्ट)
श्वेतांबर	श्वेत है जिसके अंबर अर्थात् सरस्वती

संधि और समास में अंतर

संधि वर्णो में होती है। इसमें विभक्ति या शब्द को लोप नहीं होता है। जैसे—देव + आलय = देवालय। समास दो पदों में होता है। समास होने पर विभक्ति या शब्दों का लोप भी हो जाता है। जैसे—माता पिता = माता और पिता।

कर्मधारय और बहुव्रीहि समास में अंतर कर्मधारय में समस्त पद का एक पद दूसरे का विशेषण होता है इसमें शब्दार्थ प्रधान होता है। जैसे—नीलकंट = नील कंठ।

बहुव्रीहि में समस्त पद के दोनों पदों में विशेषण विशेष्य का संबंध नहीं होता अपितु वह समस्त पद ही किसी अन्य संज्ञादि का विशेषण होता है। इसके साथ ही शब्दार्थ गौण होता है और भिन्नार्थ ही प्रधान हो जाता है। जैसे-नीला + कंठ = नीला है कंठ जिसका अर्थात् शिव।

प्रश्न अभ्यास

(क) निम्नलिखित समस्त पद का विग्रह करके समास का नाम लिखिए।

(i) राजीवलोचन

(क) राजीव के समान लोचन कर्मधारय समास

(ख) राजीव और लोचन —द्वंद्व समास

(ग) राजीव के लोचन — तत्पुरूष समास

(घ) राजीव जैसे लोचन है जिसके—बहुव्रीहि समास

(ii) जीवनसाथी

(क) जीवन और साथी — द्वंद्व समास

(ख) जीवन का साथी — तत्पुरूष समास

(ग) जीवन में साथी — तत्पुरूष समास

(घ) जीवन जैसा साथी — कर्मधारय समास

(iii) चौमासा

4. अपादान तत्पुरूष — देशनिकाला (देश से निकाला)

5. संबंध तत्पुरूष — गंगाजल (गंगा का जल)

6. अधिकरण तत्पुरूष — नगरवास (नगर में वास)

3. कर्मधारय समास—जिस समास का उत्तरपद प्रधान हो और पूर्वपद व उत्तरपद में विशेषण विशेष्य अथवा उपमान उपमेय का संबंध हो उसे कर्मधारय समास कहते हैं। जैसे—

समस्त पद	**समास विग्रह**	**समस्त पद**	**समास विग्रह**
चंद्रमुख	चंद्र जैसा मुख	कमल नयन	कमल के समान नयन
देहलता	दह रूपी लता	दही बड़ा	दही में डुबा बड़ा
नीलकमल	नीला कमल	पीतांबर	पीला अंकर
सज्जन	सत् (अच्छ) जन	नरसिंह	नरों में सिंह के समान

4. द्विगु समास—जिस समास का पूर्वपद संख्यावाचक विशेषण हो उसे द्विगु समास कहते हैं। इसमें समूह अथवा समाहार का बोध होता है। जैसे—

समस्त पद	**समास विग्रह**	**समस्त पद**	**समास विग्रह**
नवग्रह	नौ ग्रहों का समूह	दोपहर	दो पहरों का समाहार
त्रिलोक	तीनों लोकों का माहार	चौमासा	चार मासों का समूह
नवरात्र	नौ रात्रियों का समूह	शताब्दी शताब्दी	सौ अब्दों (साल) का समूह
अठन्नी	आठ आनों का समूह		

5. द्वंद्व समास—जिस समास के दोनों पद प्रधान होते हैं तथा विगह करने पर और अथवा या एवं लगता है वह द्वंद्व समास कहलाता है। जैसे—

समस्त पद	**समास विग्रह**	**समस्त पद**	**समास विग्रह**
पाप पुण्य	पाप और पुण्य	अन्न जल	अन्न और जल
सीता राम	सीता और राम	खरा खोटा	खरा और खोटा
ऊँच नीच	उंच और नीच	राधा कृष्ण	राधा और कृष्ण

6. बहुव्रीहि समास—जिस समास के दोनों पद अप्रधान हों और समस्तपद के अर्थ के अतिरिक्त कोई सांकेति अर्थ प्रधान हो उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं। जैसे—

समस्त पद	**समास विग्रह**
दशानन्	दश है आनन (मुख) जिसके अर्थात रावण

समास के भेद—समास के छः भेद हैं—

1. अव्ययवी भाव
2. तत्पुरूष समास
3. कर्मधारय समास
4. द्विगु समास
5. द्वंद्व समास
6. बहुव्रीहि समास

1. अव्ययवीभाव समास—जिस समास का पहला पद प्रधान हो और वह अव्यय हो उसके अव्ययवीभाव समास कहते हैं। जैसे—यथामति (मति के अनुसार) आमरण (मृत्यु तक) इनमें यथा और आ अव्यय है।

कुछ अन्य उदाहरण—

आजीवन — जीवन भर	यथा सामर्थ्य—सामर्थ्य के अनुसार
यथाशक्ति — शक्ति के अनुसार	यथा विधि — विधि के अनुसार
यथाक्रम — क्रम के अनुसार	भरपेट — पेट भरकर
हररोज — रोज रोज	हाथों हाथ — हाथ ही हाथ में
रातें रात — रात ही रात में	प्रतिदिन — प्रत्येक दिन
बेशक — शक के बिना	निडर — डर के बिना
निस्संदेह — संदेह के बिना	हर साल — हरेक साल

अव्ययवीभाव समास के पहचान—इसमें समस्त पद अव्यय बन जाता है अर्थात् समास होने के बाद उसका रूप कभी नहीं बदलता है। इसके साथ विभक्ति चिह्न भी नहीं लगते। जैसे—ऊपर के समस्त शब्द हैं।

2. तत्पुरूष समास—जिस समास का उत्तरपद प्रधान और पूर्वपद गौण हो उसे तत्पुरूष समास कहते हैं। जैसे—तुलसीदास कृत—तुलसी दास द्वारा कृत (रचित;

ज्ञातव्य—विग्रह में जो कारक प्रकट हो उसी कारक वाला वह समास होता है। विभक्तियों के नाम के अनुसार इसके छह भेद हैं।

1. कर्म तत्पुरूष — गिरहकट (गिरह को काटने वाला)
2. करण तत्पुरूष — मनचाहा (मन से चाहा)
3. संप्रदान तत्पुरूष — रसोईघर (रसोई के लिए घर)

2. ई

(क) घंटी (ख) पहाड़ी

(ग) रस्सी (घ) चौड़ाई

3. हार

(क) सुनार (ख) पनिहार

(ग) खेवनहार (घ) मनिहार

4. ईला

(क) नीला (ख) हठीला

(ग) खर्चीला (घ) जहरीला

उत्तरमाला

उपसर्ग

(अ) 1. (ख) 2. (ग) 3. (क) 4. (क)

(आ) 1. (ग) 2. (ख)

(इ) 1. (ग) 2. (ख) 3. (ग)

(ई) 1. (घ) 2. (ख) 3. (घ)

(उ) 1. (घ) 2. (घ) 3. (घ)

प्रत्यय

(क) 1. (क) 2. (ख) 3. (घ) 4. (ग)

(ख) 1. (क) 2. (घ) 3. (ग)

(ग) 1. (घ) 2. (घ) 3. (क) 4. (क)

समास—समास का तात्पर्य है 'संक्षिप्तीकरण'। दो या दो से अधिक शब्दों से मिलकर बने हुए एक नवीन एवं सार्थक शब्द को समास कहते हैं। जैसे—रसाई के लिए घर इसे हम रसोईघर भी कह सकते हैं।

सामासिक शब्द—समास के नियमों से निर्मित शब्द सामासिक शब्द कहलाता है। इसे समस्त पद भी कहते हैं। समास होने के बाद विभिक्तियों के चिह्न (परसर्ग) लुप्त हो जाते हैं। जैसे—राजपुत्र।

समास विग्रह—सामासिक शब्दों के बीच के संबंध को स्पष्ट करना समास विग्रह कहलाता है। जैसे—राजपुत्र = राजा का पुत्र।

पूर्वपद और उतरपद—समास में दो पद होते हैं। पहले पद को पूर्ववद और दूसरे पद को उत्तरपद कहते हैं। जैसे—गंगाजल । इसमें गंगा पूर्वपद ओर जल उत्तरपद है।

(क)निम्नलिखित शब्द में कौन सा प्रत्यय है–

1. पारलौकिक

(क) इक (ख)ईक

(ग) लौकिक (घ) लोक

2. ईमानदारी

(क) ईमान (ख)दार + ई

(ग) बेईमान (घ) बेईमानी

3. घुमक्कड़

(क) क्कड़ (ख)कड़

(ग) मक्कड़ (घ) अक्कड़

4. मिलावट

(क) मिल (ख)वट

(ग) आवट (घ) लावट

(ख)निम्नलिखित में से मूल शब्द कौन-सा है–

1. अपमानित

(क) अपमान (ख)मान

(ग) नत (घ) अप

2. संभव

(क) सम् (ख)संभ

(ग) साव (घ) भव

3. भौतिकता

(क) भौतिक (ख)भू

(ग) भूत (घ) भौ

(ग) निम्नलिखित प्रत्यय से निर्मित शब्द निम्नलिखित में से नहीं है

1. ईय

(क) पर्वतीय (ख)स्थानीय

(ग) जातीय (घ) पापनीय

2. कु

(क) कुमार्ग (ख) कुरूप

(ग) कुबुद्धि (घ) कुरूक्षेत्र

3. अव

(क) अवगुण (ख) अवनति

(ग) अवतरण (घ) अवता

प्रत्यय—जो शब्दांश धातु या शब्दों के अंत में लगकर नए शब्दों का निर्माण करते हैं उन्हें प्रत्यय कहते हैं।

जैसे : महान + ता = महानता

महानता शब्द में ता प्रत्यय है।

प्रत्यय मुख्यत: दो प्रकार के होते हैं –

1. कृत प्रत्यय
2. तध्दित प्रत्यय

1. कृत प्रत्यय—जे प्रत्यय क्रिया के मूल धातु रूप के साथ लगकर संज्ञा और विशेषणों का निर्माण करते हैं, वे कृत प्रत्यय कहलाते हैं। जैसे—पढ़ाई = पढ + आई । इसमें आई प्रत्यय है।

शब्द	**धातुरूप**	**प्रत्यय**
होनहार	हो	ना + हार
सजावट	सज	आवट
पठनीय	पठ	नीय

2. तद्धित प्रत्यय—जो प्रत्यय क्रिया के धातु रूपों को छोड़कर अन्य शब्दों जैसे संज्ञा, विशेषण, सर्वनाम आदि के साथ लगकर नए शब्द बनाते हैं, वे तध्दित प्रत्यय कहलाते हैं।

जैसे—बंगाल + ई = बंगाली। यहाँ ई तध्दित प्रत्यय है क्योंकि यह बंगाल नामक प्रत्यय के साथ मिलकर नया शब्द बना रहा है।

कुछ अन्य उदाहरण—

1. भूख + आ = भूखा
2. बुरा + आई = बुराई
3. चमक + ईला = चमकीला
4. गुण + वान = गुणवान

2. निर्

(क) नियम (ख) निषेध

(ग) निपात (घ) निर्जन

(इ) निम्नलिखित में मूल शब्द कौन-सा है–

1. अभिजात

(क) अभि (ख) अभिज

(ग) जात (घ) अभिजा

2. न्यून

(क) यून (ख) ऊन

(ग) न्यु (घ) न्यू

3. स्वच्छ

(क) स्व (ख) वच्छ

(ग) अच्छ (घ) छ

(iii) निम्नलिखित में से उपसर्ग एवं मूल शब्द अलग कीजिए–

1. प्रबल

(क) पर + बल (ख) पर् + बल

(ग) प + र्बल (घ) प्र + बल

2. अनुभव

(क) अन + उभव (ख) अनु + भव

(ग) अनु + भव (घ) अम् + उभव

3. धार्मिक

(क) धार्म + इक (ख) धरम + इक

(ग) धाम + ईक (घ) धर्म + इक

(iii) निम्नलिखित में से किस शब्द में रेखांकित उपसर्ग नहीं है–

1. अनु

(क) अनुभव (ख) अनुमान

(ग) अनुवाद (घ) अनादर

खंड-ख (व्याकरण)

शब्द निर्माण—उपसर्ग प्रत्यय

उपसर्ग—वे शब्दांश हैं जो किसी शब्द के पूर्व लगकर उस शब्द का अर्थ बदल देते हैं। या उसमें नई विशेषता उत्पन्न कर देते हैं।

जैसे : कु + पुत्र = कुपुत्र

यहाँ 'कु' शब्दांश पुत्र के साथ बैठकर नया शब्द गढ़ देता है ध्यान रहे कि कु शब्दांश है। शब्द नहीं शब्द वाक्य में स्वतंत्र रूप से प्रयुक्त हो सकता है शब्दांश नहीं: शब्दांश तो किसी शब्द के साथ जुड़कर ही नए अर्थ की रचना में सहायक हो सकता है।

प्रश्न–अभ्यास

(i) निम्नलिखित शब्द में कौन सा उपसर्ग प्रयुक्त हुआ है–

1. उन्नत

(क) उन्न (ख) उत्

(ग) उन् (घ) उत

2. निर्गुण

(क) नि (ख) निर्गु

(ग) निर् (घ) र्नि

3. उदयोग

(क) उत (ख) उद

(ग) उ (घ) उय

4. निश्छल

(क) नि: (ख) निश्

(ग) निस् (घ) नि

(ii) निम्नलिखित उपसर्ग से निर्मित शब्द छाँटिए–

1. परि

(क) प्रगति (ख) परित

(ग) परिचय (घ) परिंदा

काँटे चुमे कलियों खिलें

हारे नहीं इंसान संदेश जीवन का यही ।

1. काव्यांश के आधार पर सच का अर्थ है ?

   (क) सत्य के मार्ग पर चलना (ख) लक्ष्य को केन्द्र बनाएँ रखना

   (ग) जीवन में निरन्तर संघर्ष करना (घ) हार न मानना

2. जो है जहाँ चुपचाप अपने आपसे लड़ता रहे—पंक्ति में अपने आपसे लड़ने का अभिप्राय–

   (क) खुद से लड़ाई लड़ना

   (ख) सबसे छुपकर लड़ना

   (ग) अपनों से निनंरत संघर्ष कर आगे बढ़ना

   (घ) विपरीत स्थितियों को अनुकूल बनाने के लिए निरन्तर संघर्षरत रहना

3. काँटे और कलियाँ प्रतीक हैं–

   (क) मित्र और शत्रु के (ख) जीवन में मिलने वाले दुख सुख के

   (ग) प्रकृति के (घ) विपरीत परिस्थितियों के

4. जो नत हुआ वह मृत हुआ ज्यों वृंत से झर कर कुसुम में प्रयुक्त अलंकार–

   (क) अतिशयोक्ति अलंकार (ख) उत्प्रेक्षा अलंकार

   (ग) उपमा अलंकार (घ) रूपक अलंकार

5. काव्यांश में प्रयुक्त शब्द अपने-आप में सर्वनाम का निम्नलिखित में से कौन सा भेद है ।

   (क) पुरूषवाचक (ख) प्रश्नवाचक

   (ग) निश्चयवाचक (घ) निजवाचक सर्वनाम

उत्तरमाला

प्रश्न 1. (i) (ग) (ii) (क) (iii) (ख) (iv) (घ) (v) (ख) 1× 5 = 5

प्रश्न 2. (i) (ग) (ii) (ख) (iii) (ग) (iv) (क) (v) (ख) 1× 5 = 5

प्रश्न 3. (क) (iii) (ख) (iv) (ग) (iii) (घ) (i) (ङ) (iv) 1× 5 = 5

प्रश्न 4. (क) (iii) (ख) (ii) (ग) (iv) (घ) (iii) (ङ) (iv) 1× 5 = 5

प्रश्न 5. (क) (iii) (ख) (iv) (ग) (ii) (घ) (iii) (ङ) (iv) 1× 5 = 5

(iii) पशु पक्षियों का आवागमन (iv) सुखों व दुखों का आवागमन

(ग) भले जीत का जश्न मान _____ पंक्ति में कवि क्या प्रेरणा दे रहे हैं ?

(i) सफलता असफलता को समान भाव से स्वीकार ने की

(ii) सफलता में स्वयं को भूल जाने की

(iii) असफलता में हताश हो जाने की

(iv) परिस्थितियों के अनुसार कर्म करने की

(घ) जो शीश चढ़कार चले गए ____ पंक्ति किनकी ओर संकेत कर रही है ?

(i) ईश्वर भक्तों की ओर (ii) शहीदों की ओर

(iii) देशवासियों की ओर (iv) तपस्वियों की ओर

(ङ) दुनियां में कैसे कैसे लोग आए और चले गए ?

(i) मालिक बनने वाले (ii) किले में रहने वाले

(iii) किले बनाने वाले (iv) उपर्युक्त सभी

प्रश्न 10. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर के सही विकल्प छांटकर लिखिए। $1 \times 5 = 5$

सच हम नहीं सच तुम नहीं सच है महज संघर्ष ही

संघर्ष से हटकर जिए तो क्या जिए हम या कि तुम।

जो नत हुआ वह मृत हुआ ज्यों वृंत से झर कर कुसुम।

जो लक्ष्य भूल रूका नहीं

जो हार देख झुका नहीं।

जिसने प्रणय णथेय माना जीत उसकी ही रही

सच हम नहीं सच तुम नहीं

ऐसा करो जिससे न प्राणों में कहीं जड़ता रहे।

जो है जहाँ चुपाचाप अपने आप से लड़ाता रहे।

जो भी परिस्थितियाँ मिलें

(क) विलम्ब । (ख) परतंत्र

(ग) आश्रित (घ) सहयोग

प्रश्न 9. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर के सही विकल्प छांटकर लिखिए । $1 \times 5 = 5$

ओ नए साल कर कुछ कमाल जाने वाले को जाने दें
दिल से अभिनंदन करते हैं कुछ नई उमंग आने दे ।
आने जाने से क्या डरना ये मौसम आते जाते है
तन झुलसे शिखर दुपहरी में कभी बादल भी छा जाते हैं ।
इक वह मौसम भी आता है जब पत्ते भी गिर जाते हैं ।
हर मौसम को मनमीत बना नवगीत खुशी के गाने दे ।
जो भूल हुई जा भूल उसे अब आगे भूल सुधार तो कर
बदले में प्यार मिलेगा भी पहले औरों से प्यार तो कर
फूटेगे प्यार के जश्न मना पर हार को भी स्वीकार तो कर
मत नफरत के शोले भड़का बस गीत प्यार के गाने दे
इस दुनिया में लोखों आए और आकर चले गए
कुछ मालिक बनकर बैठ गए कुछ माल पचाकर चले गए
कुछ किलों के अंदर बद रहे कुछ किले बनाकर चले गए
लेकिन कुछ ऐसे भी आए जो शीश चढ़ाकर चले गए
उन वीरों के पद चिह्नों पर अब साथी सुमन चढ़ाने दे ।

(क) कवि नए साल से क्या कामना कर रहे हैं?

(i) स्वस्थ बने रहने की (ii) नई उमंगों के आगमन की

(iii) सुख व समृद्धि की (iv) लंबी आयु की

(ख) मौसम के आने जाने से अभिप्राय है–

(i) क्रमशः ऋतुओं का आवागमन (ii) अतिथियों का आवागमन

जिस जिससे पथ पर स्नेह मिला

उस उस राही को धन्यवाद

सांसों पर अवलम्बित काया

जब चलते चलते चूर हुई

दो स्नेह शब्द मिल गए

मिली नव स्फूर्ति थकावट दूर हुई

पथ के पहचाने छूट गए

पर साथ साथ चल रही याद

जिस जिससे पथ पर स्नेह मिला

उस उस राही को धन्यवाद

1. कवि किसे धन्यवाद देता है

(क) राही को। (ख) मित्रों को।

(ग) परिवार जन को। (घ) जीवन मार्ग पर जिस जिससे स्नेह मिला।

2. जीवन मंजिल को तय कर लेना खेल क्यों नहीं है ?

(क) समय का अभाव। (ख) लघु जीवन।

(ग) सीमित पग डग। (घ) निर्धनता।

3. कवि की थकावट कब दूर हुई ?

(क) जब स्नेह के दो शब्द मिल। (ख) जब आराम मिला।

(ग) जब साथ मिला। (घ) जब वह प्रसन्न हुआ।

4. हमेशा हमारे साथ क्या रहता है ?

(क) साथियों का साथ। (ख) साथियों का यादें।

(ग) साथियों का स्नेह। (घ) साथियों की मित्रता।

5. अवलंबित शब्द का अर्थ है–

(ग) वीरोचित कार्य (घ) विद्रोह

2. 'स्वार्थ साधना व सीमाओं में बांधना' संकेत करता है–

(क) आतंकवाद की ओर (ख) चूड़ियाँ खनकती रहें

(ग) सजाने के लिए (घ) अब्बा की नजरों के सामने रहें

3. खा गया मानो झटका में कौन-सा अलंकार निहित है ?

(क) उत्प्रेक्षा (ख) उपमा

(ग) अनुप्रास (घ) यमक

4. 'खा गया मानो झटका' में कौन-सा अलंकार निहित है ?

(क) उत्प्रेक्षा (ख) उपमा

(ग) अनुप्रास (घ) यमक

5. चूड़ियों के विषय में ड्राइवर से किसने पूछा ?

(क) बस की सवारी ने (ख) लेखक ने

(ग) ड्राइवर की बच्ची ने (घ) स्वयं ड्राइवर ने

प्रश्न 8. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर के सही विकल्प छांटकर लिखिए। $1 \times 5 = 5$

जिस जिससे पथ पर स्नेह मिला

उस उस राही को धन्यवाद

जीवन अस्थिर अनजाने ही

हो जाता पथ पर मेल कही

सीमित पग डग लंबी मंजिल

तय कर लेना कुछ खेल नहीं।

दाएँ बाएँ सुख दुख चलते

सम्मुख चलता पथ का प्रमाद

प्रश्न 7. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर के सही विकल्प छांटकर लिखिए। $1 \times 5 = 5$

आओ वीरोचित कर्म करो

मानव कुछ तो शर्म करो

यों कब तक सहम जाओग, इस परवशता के जीवन से

विद्रोह करो विद्रोह करो

जिसने निज स्वार्थ सदा साधा

जिसने सीमाओं में बांधा

आओ उससे उसकी निर्मित जगत के अणु अणु कण कण से

विद्रोह करो विद्रोह करो

मनमानी सहना हमें नहीं

पशु बनकर रहना हमें नहीं

विधि के मत्थे पर भाग्य पटक, इस नियति की उलझन से वि

विद्रोह करो, विद्रोह करो

विप्लन गायन गाना होगा

सुख स्वर्ग यहाँ लाना होगा

अपने ही पौरूष के बल पर, जर्जन जीवन के क्रन्दन से

विद्रोह करो, विद्रोह करो

क्या जीवन व्यर्थ गंवाना है

कायरता पशु का बाना है

इस निरूत्साह मुर्दा दिल से, अपने तल से अपने तन से

1. मनुष्य के लिए शर्मनाक है–

(क) स्वार्थी भावनाएँ (ख) पराधीनता का जीवन

देखकर मुझको यों बोले

हम भी कितने बदकिस्मत हैं।

जो खतरों का नहीं सामना करते

वे कैसे ऊपर का नहीं सामना करते

इसी बड़े की छाया ने ही हमको बौना बना रखा

हम बड़ें दुखी हैं''

1. इस कविता में बरगद प्रतीक है–

   (क) बूढ़े व्यक्ति का (ख) बड़े बुजुर्गो का

   (ग) पुरानी परम्पराओं का (घ) रूढ़ियोंका

2. छोटे छोटे पौधे प्रतीक हैं–

   (क) छोटे बच्चों का (ख) नवजात

   (ग) नई पीढ़ी का (घ) नई परम्पराओं का

3. बड़े सुशली विनम्र छोटे छोटे पौधे अपने आपको खुशकिस्मत इसलिए मानते हैं क्योंकि

   (क) बरगद की विशाल छत्र छाया में वे अपने आप को सुरक्षित महसूस करते

   (ख) उन्हें धूप नहीं लगती

   (ग) उन्हें खतरों का सामना नहीं करना पड़ता

   (घ) वे वर्षा आंधी और तूफान का सामना नहीं करना चाहते

4. दूसरे अंश में छोटे छोटे पौधे असंतुष्ट और रूष्ट हैं क्योंकि–

   (क) वे बरगद को अपना दुश्मन मानते हैं।

   (ख) वे बरगद का खतरनाक मानते हैं।

   (ग) उन्हें बरगद से कोई लगाव नहीं है।

   (घ) वे बरगद की छाया को अपने विकास में बाधा मानते हैं।

5. वे अपने आपको बदकिश्मत इसलिए मानते हैं क्योंकि

   (क) वे अपने छोटे स्वरूप से खुश नहीं है

   (ख) उन्हीं चुनौतियों को स्वीकार कर आगे बढ़ने का अवसर नहीं मिल रहा

   (ग) वे आजादी चाहते हैं जो उन्हें मिल नहीं रही

   (घ) वे बरगद के आश्रय में रह रहे हैं।

(iv) जिनमें ग्रामीण जन जीवन की जटिलता हो

(घ) कवि देश की पहचान के विषय में क्या कहना चाह रहा है ?

(i) देश की पहचान गांवों के जीवन की सहजता के कारण नहीं शहरी बनावटीपन के कारण है ।

(ii) देश की पहचान शहरों के विकास के कारण है गांवों के पिछड़ेपन के कारण नहीं है ।

(iii) देश की पहचान शहरों के बनावटी पनकेकारण नहीं गांवों के जीवन की सहजता के कारण है ।

(iv) देश की पहचान सूनी ताकती आंखें के कारण नहीं पुते गालों के कारण है ।

(ङ) इस काव्यांश का उपर्युक्त शीर्षक होगा–

(i) मुस्कराती मुस्कान (ii) गर्वीले भवें

(iii) छाया प्यार की (iv) आंखे मेरेदेश की

प्रश्न 6. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर के सही विकल्प छांटकर लिखिए । 1 × 5 = 5

मैनें देखा
एक बड़ा बरगद का पेड़ खड़ा है
उसके नीचे कुछ छोटे छोटे पौधे
बड़े सुशील विनम्र
देखकर मुझकों यों बोले–
हम भी कितने खुशकिस्मत हैं
जो खतरों का नहीं सामना करते
आसमान से पानी बरसे, आंधी गरजे,
बिजली कड़के, आग बरसे
हमको कोई फिक्र नहीं है
एक बड़े की वरद छत्रछाया के नीचे
हम अपने दिन बिता रहे हैं
बड़े सुखी हैं ।
मैंने देखा
एक बड़ा बरगद का पेड़ खड़ा है
उसके नीचे कुछ छोटे छोटे पौधे
असंतुष्ट औ ''रूश्ट

नहीं, वे मेरे देश की आंखे नहीं है .....

वन डालियों के बीच से चौंकी अनपहचानी

कभी झांकती हैं वे आंखे,

मेरे देश की आंखें

खेतों के पार

मेड़ की लीक धारे

क्षिति रेखा खीजती

सूनी कभी ताकती हैं

वे आंखें

डलिया हाथ से छोड़ा

और उड़ी पुल के बादल के बीच में से झलमलाते

जाड़ों की आमवस में से

मैले चांद चेहरे सकुचाते

टंकी थकी पलकें

उठाई

और कितने काल सागरों के पार तैर आई मेरे देश की आंखें .....

(क) 'पुते गालों एवं नकली भावों' से कवि का क्या आशय है ।

(i) तरक्की एवं बनावटीपन (ii) आधुनिकता एवं विकास

(iii) छलावा एवं बनावटीपन (iv) छलावा एवं सूनापन

(ख) कवि किस प्रकार की आंखों को अपने देश की आंखे नहीं मानता ?

(i) शर्माति एवं सकुचाती, प्यार का छलावा करती आंखें को

(ii) तनाव एवं घृणा से भरी, प्यार का इजहार करती आंखों को

(iii) ग्रामीण जन जीवन की सहजता के भरी आंखें को

(iv) तनाव एवं घृणा से भरी, प्यार का छलावा करती आंखें को

(ग) कवि किन आंखों को अपने देश की आंखे मानता है ?

(i) जिनमें तनाव एवं घृणा भरी हो

(ii) जिनमें ग्रामीण जन जीवन का सहजता हो

(iii) जिनमें प्यार का छलावा हो

नित नई बीमारी फैली है ।

(क) मनुष्य धरती पर फसल उगा रहा है

(i) घृणा की फसल (ii) प्रेम की फसल

(iii) बढ़ती जनंसख्या की फसल (iv) आम की फसल

(ख) 'शस्य श्यामल धरा' से अभिप्राय है

(i) काली सूखीधरा (ii) हरी भरी उपजाउ धरा

(iii) बंजर धरा (iv) सूखी फटी धरा

(ग) गंगा का जल कैसा हो गया ?

(i) निर्मल व पवित्र (ii) अथाह

(iii) सूख गया है (iv) मैला व प्रदूषित

(घ) काव्यांश संदेश दे रहा है

(i) पर्यावरण को बचाने का (ii) वृक्षारोपण का

(iii) जनसंख्या वृद्धि रोकने का (iv) उपर्युक्त सभी

(ङ) इस काव्यांश का उपयुक्त शीर्षक होगा–

(i) बरबादी (ii) शस्य-श्यामला धरा

(iii) बबूल की फसल (iv) उपर्युक्त सभी

प्रश्न 5. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर के सही विकल्प छांटकर लिखिए । $1 \times 5 = 5$

नहीं ये मेरे देश की आंखे नहीं हैं
पुते गालों के ऊपर
नकली भावों के नीचे
छाया प्यार के छलावे बिछाती
मुकर से उठाई हुई
मुसकान मुसकराती
ये आँखें
नहीं, वे मेरे देश की नहीं हैं
तनाव से झुरिया पड़ी कोरों की दरार से
शरीर छोड़ती घृणा से सिकुड़ी पुतलियाँ

(ङ) 'तांडव' और 'विष' का उल्लेख किसके संदर्भ में किया गया है ?

(i) मीरा (ii) कृष्ण

(ii) पार्वती (iv) शिव

प्रश्न 4. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर के सही विकल्प छाँटकर लिखिए। $1 \times 5 = 5$

बहुत बड़ी बरबादी की
इस धरी पर आबादी की
यूँ फसल उगाते जाओग
अब वह दिन ज्यादा दूर नहीं
जब सिर धुन-धुन पछताओगे ।

तुम कितने जंगल तोड़ोगे,
कितने वृक्षों को काटोगे,
इस शस्य श्यामला धरती को
कितने टुकड़ों में बाँटोगे
है किंचित तुमको सबर नहीं
क्या ये भी तुमको खबर नहीं ?
ये धरती तो बस धरती है,
ये धरती कोई रबर नहीं
बोते हो पेड़ बबूल के
फिर आम कहाँ से खाओगे ?

वह बढ़ती जाती बदहाली,
खोगई सुबह की तरूणाई
खोगई शाम की वह लाली
बिन वर्षा के इस धरती पर
तुम कैसे अन्न उगाओगे ?

यह गंगा भी अब मैली है
जल की हर बूँद विषैली है
इस दूषित जल के पीने से

वे हमीं तो हैं कि इक हुंकार से यह भूमि कांपी,
वे हमीं तो हैं जिन्होंने तीन डग में सृष्टि नापी,
और वे भी हम, कि जिनकी सभ्यता के विजयरथ
धूल उड़कर छोड़कर आई छाप अपनी विश्वव्यापी ।
वक्र हो आई भृकुटि तो ये अचल नगराज डोले,
दश दशाओं के सबल दिक्पाल ये गजराज डोले,
डोल उठी है धरा, अंबर, भुवन, नक्षत्र मंडल
ढीठ अत्याचारियों के अहंकारी ताज डोले
सुयश की प्रस्तर शिला पर चिह्न गहरे हैं हमारे
ज्ञान शिखरों पर धवल ध्वज चिह्न लहरें हैं हमारे
वेग जिनका यों कि जैसे काल की अंगड़ाइयाँ हों,
उन तरंगों में निडर जलयान ठहरे हैं हमारे ।
लास्य भी हमने किए हैं और तांडव भी किए हैं,
वंश मीरा औरर शिव के, विषय पिया है और जिए हैं
दूध माँ का, या कि चंदन या कि केसर जो समझ लो
यह हमारे देश की रज है, कि हम इसके लिए हैं ।

(क) 'हम' शब्द का प्रयोग किया गया है–

(i) कवि के लिए (ii) मानव मात्र के लिए
(iii) भारत वासियों के लिए (iv) संपूर्ण विश्व के लिए

(ख) किसकी छाप विश्वव्यापी है ?

(i) पाश्चात्य सभ्यता की (ii) मिश्र सभ्यता की
(iii) माया सभ्यता की (iv) भारतीय सभ्यता की

(ग) पर्वत से लेकर क्रूर शासक तक कब डोलने लगते हैं ?

(i) भूकंप आने पर (ii) भारतवासियों के क्रोध पर
(ii) ज्वालामुखी फटने पर (iv) प्रलय आने पर

(घ) भारतवासियों के स्वभाव की विशिष्टता है–

(i) मानव मात्र के प्रति संवेदना (ii) अपनी शक्ति के प्रति अहंकार
(iii) सुख-सुविधाओं के लिए लालसा (iv) सृष्टि के विनाश की चाह

खा गया मानों झटका।

अधेड़ उम्र को मुच्छड़ रौबीला चेहरा

आहस्ते से बोला : हाँ सा 'ब'

लाख कहता हूँ नहीं मानती है मुनिया।

टाँगे हुए हैं कई दिनों से

अपनी अमानत यहाँ अब्बा की नजरों के सामने।

1. 'ड्राइवर को सात साल की बच्ची का पिता तो है' क्यों कहा गया है ?

   (क) ड्राइवर भी पिता हो सकता है।

   (ख) ड्राइवर का व्यवहार कठोर होता है।

   (ग) बस के ड्राइवर भी संवेदनशील होते हैं।

   (घ) ड्राइवर को पिता नहीं होना चाहिए।

2. बस में गयर के हुक में काँच की चूड़ियाँ किसने लटका रखी हैं ?

   (क) ड्राइवर ने (ख) मुनिया ने

   (ग) लेखक ने (घ) बस वाले ने

3. बस में चूड़ियाँ टाँगने से बच्ची का क्या उद्देश्य है–

   (क) चूड़ियाँ खनकती रहें (ख) सजाने के लिए

   (ग) अब्बा की नजरों के सामने रहें (घ) चूड़ियाँ हिलती रहें

4. खा गया मानो झटका में कौन-सा अलंकार निहित हैं ?

   (क) उत्प्रेक्षा (ख) उपमा

   (ग) अनुप्रास (घ) यमक

5. चूड़ियों के विषय में ड्राइवर से किसने पूछा ?

   (क) बस की सवारी ने (ख) लेखक ने

   (ग) ड्राइवर की बच्ची ने (घ) स्वयं ड्राइवर ने।

प्रश्न 3. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प छाँटकर लिखिए। $1 \times 5 = 5$

आँधियों ने गोद में हमको खिलाया है न भूलो

कंटकों ने सिर हमें सादर झुकाया है न भूलो

सिंधु का मथ कर कलेजा हम सुधा भी शोध लाए

औ हमारे तेज से सूरज लजाया है न भूलो

सौ बार धन्य वह एक लाल की माई
जिस जननी ने है जना भरत सा भाई
पागल सी प्रभु के साथ सभा चिल्लाई
सौ बार धन्य वह एक लालकी माई

1. रघुकुल में यह अभागिन रानी कौन थी ?
   (क) कौशल्या (ख) सीता
   (ग) कैकेयी (घ) गंधारी
2. इस काव्यांश में रानी का कौन-सा भाव प्रकट हो रहा है–
   (क) प्रायश्चित (ख) सहानुभूति
   (ग) क्रोध (घ) गर्व
3. सौ बार धन्य वह एक लाल की माई किसका कथन हो सकता है ।
   (क) भरत (ख) सभा
   (ग) राम (घ) मुनिगण
4. पागल सी सभा में कौन सा अलंकार प्रयुक्त हुआ है–
   (क) श्लेश (ख) उत्प्रेक्षा
   (ग) अनुप्रास (घ) उपमा
5. अच्छे भाई की उपमा किससे दी जाती है ?
   (क) राम (ख) भरत
   (ग) सभा (घ) लाल की माई

प्रश्न 2. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प छाँटकर लिखिए । 1 × 5 = 5

प्राइवेट बस का ड्राइवर है तो क्या हुआ ?
सामने गीयर से उपर
हुक से लटका रखी है
काँच की चार चूड़ियाँ गुलाबी ।
बस की रफ्तार के मुताबिक
हिलती रहती हैं,
झुक कर मैंने पूछ लिया,

2. कालिदास को पंडित कहाँ ले गया ?

(क) विद्योत्तमा का राजमहल दिखाने। (ख) विद्योत्तमा से मिलवाने के लिए।

(ग) विद्योत्तमा के पास सजा दिखवाने। (घ) विद्योत्तमा से शास्त्रार्थ करने के लिए।

3. विदुषी राजकन्या का विवाह जड़मति कालिदास से क्यो हो गया ?

(क) कालिदास सुदर्शन व्यक्तित्व के थे। (ख) विद्वान वर्ग ने उनके मौन संकेतों की मनमानी व्याख्या थी।

(ग) कालिदास धनी थे। (घ) राजकन्या कालिदास से प्रेम करती थी।

4. कालिदास किस प्रकार महाकवि बन गए ?

(क) पत्नी के प्रेम के कारण (ख) साहित्य रचना के कारण

(ग) कठिन परिश्रम और निरन्तर साधना से (घ) घर से त्यागकर जाने के कारण।

5. इस गद्यांश का उचित शीर्षक दीजिए।

(क) जड़मति कालिदास (ख) विद्योत्तमा और कालिदास।

(ग) महाकवि कालिदास (घ) करत करत अभ्यास के जड़मति हो सुजान।

उत्तरमाला

प्रश्न 1.	(i) (ख)	(ii) (ग)	(iii) (घ)	(iv) (ख)	1× 5 = 5
प्रश्न 2.	(i) (क)	(ii) (ख)	(iii) (ग)	(iv) (घ)	1× 5 = 5
प्रश्न 3.	(क) (iii)	(ख) (iii)	(ग) (iii)	(घ) (ii) (ङ) (iv)	1× 5 = 5
प्रश्न 4.	(क) (iii)	(ख) (iii)	(ग) (i)	(घ) (iv) (ङ) (i)	1× 5 = 5
प्रश्न 5.	(क) (iii)	(ख) (iv)	(ग) (i)	(घ) (iv) (ङ) (iii)	1× 5 = 5

(अपठित काव्यांश)

प्रश्न 1. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प छाँटकर लिखिए।

युग-युग तक चलती रहे कठोर कहानी

'रघुकुल में थी एक अभागिन रानी'

'धिक्कार उसे था महास्वार्थ ने घो

1. इस अनुच्छेद का उपयुक्त शीर्षक दीजिए–

(क) जीवन एक कर्मक्षेत्र (ख) सफलता का रहस्य

(ग) संघर्ष और सफलता (घ) बढ़ते चलो

2. अपराजेय का विलोम है–

(क) पराजेय (ख) पराजित

(ग) अजय (घ) अजेय

3. अनुभवी जनों का कहना है कि जीवन कर्मक्षेत्र है रचना की दृष्टि में कैसा वाक्य है ?

(क) सरल (ख) संयुक्त

(ग) मिश्र (घ) साधारण

4. यह पाठ आपको क्या प्रेरणा देता है ?

(क) संघर्ष की (ख) कर्म की

(ग) शक्ति की (घ) मौज मस्ती की

5. वीर एक से अधिक बार कभी नहीं मरते का आशय है–

(क) वीर एक बार ही मरते हैं। (ख) वीर पहली बार मर जाते हैं।

(ग) वीर मर मरकर नहीं जीते। (घ) वीर अमर हो जाते हैं।

उत्तरमाला—1. (क) 2. (ख) 3. (ग) 4. (घ) 5. (ग)

5. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प चुनकर लिखिए।

1 × 5

कालिदास उसी डाली को काट रहे थे, जिस डाली पर बैठे थे। विद्योत्तमा नामक विदुषी राजकन्या का मान भंग करने का षड्यंत्र कर रहे थे तथाकथित विद्वान—वर्ग को वह व्यक्ति (कालीदास) सर्वाधिक जड़मति और मूर्ख लगा। सो वे उसे ही कुछ लाभ का लालच दे, कुछ उटपटाँग सिखा पढ़ा, महापंड़ित के वेश में सजा धजाकर राजदरबार में विदुषि राज कन्या विद्योत्तमा से शास्त्रार्थ करने के लए ले गए। उस मुर्ख के उटपटाँग मौन संकेतों की मनमानी व्याख्या कर षड़यंत्र कारियों ने उस विदुषी से विवाह करा ही दिया, लेकिन प्रथम रात्रि में ही वास्तविकता प्रकट हो जाने पर पत्नी के ताने से घायल होकर ज्यों घर से निकले, कठिन परिश्रम और निरंतर साधना रूपी रस्सी के आने-जाने से घिस पिटकर महाकवि कालिदास बनकर घर

1. कालिदास डाली को क्यों काट रहे थे, जिस डाली पर वे बैठे थे ?

(क) वे विद्वान थे। (ख) वे जड़मति थे।

(ग) वे महापंडित थे। (घ) वे लकड़हारे थे।

1. स्वतंत्रता प्राप्त करने के पश्चात् भी राष्ट्रभाषा के रूप में हम अब तक ठीक प्रकार से क्या प्राप्त नहीं कर पाए हैं ?

(क) वाणी (ख) विचार

(ग) भाव (घ) सोच समझ

2. हमारे यहाँ परतंत्रता आई

(क) आंधी के समान (ख) तूफान के समान

(ग) रोग के किटाणु लाने वाले मंद समीर के समान (घ) वर्षा के समान

3. शिक्षा, कला, साहित्य आदि किसके वाहक हैं ?

(क) परिवार (ख) व्यक्ति

(ग) समाज (घ) संस्कार

4. हम किसके अभाव में जीवित रहने की कल्पना से सिहर उठते हैं ?

(क) लोकभाषा (ख) मातृभाषा

(ग) विदेशी भाषा (घ) राजभाषा

5. जीवन की पूर्णता के लिए आवश्यक है ?

(क) सुख सुविधाओं का होना (ख) उसके मनोजगत को मुक्त करना

(ग) अपनी वाणी का होना (घ) स्वतंत्र रहना

4. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान से पढ़िए और दिए गए प्रश्नों के उत्तर में से सही उत्तर छांटकर लिखिए।

(द) समस्त ग्रंथों एवं ज्ञानी, अनुभवी जनों का कहना है कि जीवन एक कर्मक्षेत्र है। हमें कर्म के लिए जीवन मिलता है। कठिनाइयाँ एवंदुख और कष्ट हमारे शत्रु हैं जिनका हमें सामना करना है और उनके विरूद्ध संघर्ष करके हमें विजयी बनना है दृद्वा दुख अंग्रेजी के यशस्वी नाटक का शेक्सपीयर ने ठीक ही कहा है कि ''कायर अपनी मृत्यु से पूर्व अनेक बार मृत्यु का अनुभव कर चुके होते है। किंतु वीर एक से अधिक बार कभी नहीं मरते।''

विश्व के प्राय: समस्त महापुरूषों के जीवनवृत्त अमरीका के निर्माता जॉर्ज वाशिगंटन और राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन से लेकर भारत के राष्ट्रपिता महात्मागांधी और भारत के प्रधानमंत्री लाल बहादुरशास्त्री के जीवन चरित्र हमें यह शिक्षा देते हैं कि महानता का रहस्य संघर्ष शीलता, अपराजेय व्यक्तित्व है। इन महापुरूषों को जीवन में अनेक संकटों का सामना करना पड़ता है। परन्तु वे घबराए नहीं, संघर्ष करते रहे और अंत में सफल हुए संघर्ष के मार्ग में अकेला ही चलना पड़ता है। कोई बाहरी शक्ति आपको सहायता नहीं करती है। परिश्रम, दृढ इच्छा शक्ति व लगन आदि मानवीय गुण व्यक्ति को संघर्ष करने और जीवन में सफलता प्राप्त करने का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

3. कैसा व्यक्ति स्निग्ध वाणी और शिष्ट व्यवहार का प्रयोग करता है ?

(क) अवसरवादी (ख) अहंकारी

(ग) विनीत (घ) अलमस्त

4. सहयोग और सेवा की भावना से आशय है ?

(क) सेवा भावना (ख) सहकारिता

(ग) सहिष्णुता (घ) सद्भावना

5. इस गद्यांश के लिए उपर्युक्त शीर्षक होगा–

(क) अधिकार और कर्त्तव्य (ख) अच्छा नागरिक

(ग) आदर्श जीवन (घ) सामाजिक जीवन

उत्तरमाला—1.(क) 2.(ग) 3. (ग) 4. (ख) 5. (ख)

3. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान से पढ़िए और दिए गए प्रश्नों के उत्तर में से सही उत्तर छांटकर लिखिए।

(स) आज हम एक स्वतंत्र राष्ट्र की स्थिति पा चुके हैं। राष्ट्र की अनिवार्य विशेषताओं में दो हमारे पास है—भौगोलिक अखंडता और सांस्कृतिक एकता, परंतु अभी तक हम उस वाणी को प्राप्त नहीं कर सके हैं। जिसमें एक स्वतंत्र दूसरे राष्ट्रों के निकट अपना परिचय देता है। जहाँ तक बहुभागी भाषी होने का प्रश्न है ऐसे देशों की संख्या कम नहीं है जिनके भिन्न भागों में भिन्न भाषाओं की स्थिति है। पर उनकी अविच्छिन्न स्वतंत्रता की परंपरा ने उन्हें विषम स्वरों से एक राय रच लेने की क्षमता दे दी है। हमारे देश की कथा कुछ दूसरी है। हमारी परतंत्रता आंधी तूफान की तरह नहीं आई जिसका आकस्मिक संपर्क तीव्र अनुभूति से अस्तित्व को कंपित कर देता है। वह तो रोग के किटाणु लाने वाले मंद समीर के समान सांस में समाकर शरीर में व्याप्त हो गई है। हमने अपने संपूर्ण अस्तित्व से उसके भार को दुर्वह नहीं अनुभव किया और हमें यह ऐतिहासिक सत्य भी विस्मृत हो गायकी कि कोई भी विजेता विजित कर राजनीतिक प्रभुत्व पाकर ही संतुष्ट नहीं होता क्योंकि सांस्कृतिक प्रभुत्व के बिना राजनीतिक विजयन पूर्ण है न स्थायी। घटाए संस्कारों में चिरजीवन पाती है और संस्कार के अक्षय वाहक शिक्षा, साहित्य कला आदि है। दीर्घकाल से विदेशी भाषा हमारे विचार विनिमय और शिक्षा का माध्यम ही नहीं रही वह हमारे विद्वान और संस्कृत होने का प्रमाण भी मानी जाती रही है। ऐसी स्थिति में यदि हममें से अनेक उसके अभाव में तो चिकित्सा संभव नहीं होती। राष्ट्र जीवन की पूर्णता के लिए उसके मनोजगत को मुक्त करना होगा और यह कार्य विशेष प्रयत्न साध्य है क्योंकि शरीर को बांधने वाली श्रृंखला से आत्मा को जकड़ने वाली श्रृंखला अधिक दृढ़ होती है।

4. बेटा बाप से क्यों झुझँला गया ?

(क) बाप द्वारा बेटे की मूर्त्तियों में निंरतर दोष निकालने के कारण

(ख) बाप द्वारा बेटे की मूर्त्तियों की प्रशंसा

(ग) बेटे की मूर्त्तियों की कीमत पांच रूपये मिलने के कारण

(घ) बेटे में घमण्ड होने के कारण

5. आप की मूर्तियों हमेशा डेढ़ दो रूपये में ही क्यों बिकती रही ?

(क) बाप में कला की पूर्णता का अहंकार हो गया था ।

(ख) बाप की मूर्त्तिया कच्ची मिट्टी की थी।

(ग) बाप सस्ता बेचने का आदि हो गया था।

(घ) बाप से देहाती लोग ही मूर्तियां खरीदते थे ।

उत्तरमाला

1 (क) 2. (ख) 3. (क) 4. (क) 5. (क)

2. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान से पढ़िए और दिए गए प्रश्नों के उत्तर में से सही उत्तर छांटकर लिखिए ।

(ब) अच्छा नागरिक बनने के लिए भारत के प्राचीन विचारकों ने कुछ नियमों का प्रावधान किया है । इन नियमों में वाणी और व्यवहार की शुद्धि कर्त्तव्य और अधिकार का समुचित निर्वाह, शुद्धतम पारस्परिक सद्भाव, सहयोग और सेवा की सेवा भावना आदि नियम बहुत महत्त्वपूर्ण माने गए हैं । इन सभी गुणों का विकास एक बालक में यदि उसकी बाल्यावस्था से ही यिका जाए तो वह अपने देश का श्रेष्ठ नागरिक बन सकता है । वाणी एवं व्यवहार की मधुरता सभी के लिए सुखदायक होती है, समाज में हार्दिक सद्भाव की वृद्धि करती है, किन्तु अहंकारहीन व्यक्ति ही स्निग्ध वाणी ओर शिष्ट व्यवहार का प्रयोग कर सकता है । जिस प्रकार एक व्यक्ति समाज में रहकर अपने व्यवहार से कर्त्तव्य और अधिकार की भावना से भावित रहना चाहिए । उसका कर्त्तव्य हो जाता है कि न तो वह स्वयं कोई ऐसा काम करे और न ही दूसरों को करने दें, जिससे देश के सम्मान, संपत्ति और स्वाभिमान को ठसे पहुंचे ।

1. अच्छा नागरिक बनने के गुणों का विकास मनुष्य में कब से करना चाहिए ?

(क) बाल्यावस्था से (ख) किशोरावस्था से

(ग) युवावस्था से (घ) किसी भी अवस्था से

2. किस की मधुरता सबके लिए सुखदायी होती है ?

(क) खान पान की (ख) पहनने ओढ़ने की

(ग) वाणी व्यवहार की (ग) घर बाहर की

प्रथम सत्र अप्रैल से सितम्बर

खंड–क

अपठित गद्यांश

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान से पढ़िए और दिए गए प्रश्नों के उत्तर में से सही उत्तर छांटकर लिखिए।

(अ) एक बाप ने बेटे को भी मूर्त्तिकला सिखाई दोनों हाट में जाते और अपनी अपनी मूर्त्तियां बेचकर आतें। बाप की मूर्त्ति डेढ़ दो रूपये में बिकती, पर बेटे की मूर्त्तियों का मूलय केवल आठ दस आने से अधिक न मिलत। हाट से लौटने पर बेटे को पास बैठाकर बाप उसकी मूर्तियों में रही त्रुटियों को समझाता और अगले दिन उन्हें सुधारने के लिए कहता। यह क्रम वर्षों से चलता रहा। लड़का समझदार था। उसने पिता की बातें ध्यान से सुनी और अपनी कला में सुधार करने का प्रयत्न करता रहा।

कुछ समय बाद लड़के की मूर्त्तियां भी डेढ़ रूपये की बिकने लगीं बाप भी उसी तरह समझाता और मूर्त्तियों में होने वाले दोषों की तरफ उसका ध्यान खींचता। बेटे ने और अधिक ध्यान दिया तो कला भी और अधिक निखरी। मूर्त्तियों पांच पांच रूपये की बिकने लगी। सुधार के लिए समझाने का क्रम बाप ने तब भी बंद न किया। एक दिन बेटे ने झुझलाकर कहा आप तो दोष निकालने की बात बंद ही नहीं करते। मेरी कला अब तो आप से भी अच्छी है, मुझे मूर्ति के पांच रूपये मिलते हैं। जबकि आपको दो ही रूपये।

बाप ने कहा बेटा, जब मैं तुम्हारी उम्र का था। तब मुझे अपनी कला की पूर्णता का अंहकार हो गया और फिर सुधार की बात सोचना छोड़ दिया। तब से मेरी प्रगति रूक और दो रूपये से अधिक की मूर्तियां न बना सका। मैं चाहता हूँ वह भूल तुम न करों। अपनी त्रुटियों को समझने और सुधारने का क्रम सदा जारी रखों ताकि बहुमूल्य मूर्त्तियां बनाने वाले श्रेष्ठ कलाकारों की श्रेणी में पहुंच सको।

1. बाप और बेटे क्या बनाते थे ?

(क) मूर्तियाँ (ख) मूर्त्तिकला

(ग) रूपये (घ) कुछ नहीं

2. हाट से लौटकर बाप अपने बेटे को क्या समझाता था ?

(क) मूर्त्तियाँ की अच्छाइयों को (ख) मूर्त्तियों की त्रुटियों को

(ग) मूर्त्तियों की कला को (घ) मूर्त्तियों की बिक्री को

3. प्रारम्भ में बेटे की मूर्त्तियों का मूल्य कितना मिलता था ?

(क) आठ-दस आने (ख) दस-बारह आने

(ग) छः-सात आने (घ) चार-छः आने

क्र.सं. सं.	पाठ्य पुस्तक	प्रथम पुस्तक (अप्रैल से सितम्बर)			द्वितीय सत्र (अक्टूबर से मार्च)		
	व्याकरण	**FA1 10**	**FA2 10**	**SAI 30**	**FA3 10**	**FA4 10**	**SAII 30**
1.	शब्द निर्माण– उपसर्ग–2 अंक प्रत्यय–2 अंक समास–3 अंक	√		√	√		√
2.	अर्थ की दृष्टि से वाक्य के भेद–4 अंक		√	√			√
3.	अलंकार–4 अंक (शब्दालंकार अनुप्रास, यमक, श्लेष) (अर्थालंकार उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति मानवीकरण)	√	√	√	√		√
4.	अपठित गद्यांश (5 + 5 = 10 अंक)			√			√
5.	अपठित काव्यांश (5 + 5 = 10 अंक)			√			√
6.	पत्र लेखन (5 अंक)			√			√
7.	निबन्ध लेखन (10 अंक)			√	√		√
8.	प्रतिवेदन (5 अंक)		√	√			√

		FA 1 10	FA 2 10	FA I 30	FA 3 10	PSA 10	SA II 30
12.	माखनलाल चतुर्वेदी– कैदी और कोकिला		√	√			
13.	सुमित्रानन्दन पन्त– ग्राम श्री		√	√			
14.	केदारनाथ अग्रवाल–चन्द्र गहना से लौटती बेर				√		√
15.	सर्वेश्वर दयाल सक्सेना– मेघ आए				√		√
16.	चन्द्रकांत देवताले– यमराज की दिशा						√
17.	राजेश जोशी–बच्चे काम पर जा रहे हैं						√
	कृतिका	FA 1 10	FA 2 10	FA I 30	FA 3 10	PSA 10	SA II 30
1.	फणीश्वरनाथ रेणु– इस जल प्रलय में	√		√			
2.	मृदुला गर्ग– मेरे संग की औरतें		√	√			
3.	जगदीश चन्द्र माथुर– रीढ़ की हड्डी				√		√
4.	माटी वाली–विद्यासागर नौटियाल				√		√
5.	शमशेर बहादुर सिंह– किस तरह आखिरकार मैं हिन्दी में आया				√		√

कक्षा नौवीं हिन्दी 'अ' -संकलित एवं फॉरमैटिव परीक्षाओं हेतु पाठ्यक्रम का विभाजन
(2014-15)

क्र. सं.	पाठ्य पुस्तक	प्रथम सत्र (अप्रैल से सितम्बर)			द्वितीय सत्र (अक्टूबर से मार्च)		
	क्षितिज भाग-1 गद्य खण्ड	FA 1 10	FA 2 10	FA I 30	FA 3 10	PSA 10	SA II 30
1.	प्रेमचन्द–दो बैलों की कथा	√		√			
2.	राहुल सांस्कृत्यायन– ल्हास की ओर	√		√			
3.	श्यामचरण दूबे–उपभोक्तावाद की संस्कृति		√	√			
4.	जाबिर हुसैन–साँवले सपनों की याद		√	√			
5.	चपला देवी–नाना साहब की पुत्री देवी मैना देवी को भस्म कर दिया गया				√		√
6.	हरिशंकर परसाई– प्रेमचंद के फटे जूते				√		√
7.	महादेवी वर्मा–मेरे बपचन के दिन						√
8.	हजारी प्रसाद द्विवेदी– एक कुत्ता और एक मैना						√
	काव्य खण्ड	FA 1 10	FA 2 10	FA I 30	FA 3 10	PSA 10	SA II 30
9.	कबीर-साखियाँ एवं सबद	√		√			
10.	ललद्यद-वाख	√		√			
11.	रसखान-सवैये	√	√	√			

(ब) अभिव्यक्ति की क्षमता पर केन्द्रित औपचारिक अथवा अनौपचारिक विषयों में से किसी एक विषय पर पत्र ।	05	
(स) किसी एक विषय पर 'प्रतिवेदन' । (केवल कक्षा नौवीं हेतु) दिए गए गद्यांश का 'सार लेखन' । (केवल कक्षा दसवीं हेतु)	05	
कुल		90

संकलित परीक्षा 1	30%
संकलित परीक्षा 2	30%
फॉरमैटिव परीक्षा एफ.ए.-1 (भार 10%), समस्या समाधान आकलन (भार 10%) एफ.ए.-3 (भार (10%), एफ.ए.-4 (भार 10%)	40%
कुल भार	100%

(मूल्यपरक प्रश्न पूरक पाठ्यपुस्तक पर आधारित होगा । इसके लिए 5 अंक निर्धारित हैं ।)

टिप्पणी :

1. संकलित परीक्षाओं का कुल भार 60 प्रतिशत तथा फॉरमेटिव परीक्षाओं का कुल भार 40 प्रतिशत होगा। फॉरमैटिव परीक्षाओं के 40 प्रतिशत में से प्रत्येक सत्र में 5 प्रतिशत भाग (सम्पूर्ण वर्ष में 10 प्रतिशत) श्रवण व वाचन कौशलों के परीक्षण हेतु आरक्षित होगा। शेष 30 प्रतिशत फॉरमैटिव मूल्यांकन, पाठ्यचर्या के अन्य अंगों जैसे पठन, लेखन, व्याकरण, पाठ्यपुस्तक व पूरक पाठ्यपुस्तक, पर आधारित होगा। इसमें बोलने, सुनने, लिखने व बोध पर आधारित मौखिक, लिखित अथवा कार्यकलापों पर आधारित परीक्षण किया जा सकता है ।
2. संकलित परीक्षा एक (एस-1) 90 अंकों की होगी। 90 अंकों को मूल्यांकन के पश्चात् 30 अंकों में से परिवर्तित कर लिया जाएगा तदुपरांत ग्रेड का निर्धारण किया जाएगा तथा संकलित परीक्षा दो (एस-2) 90 अंकों की होगी व 90 अंकों को मूल्यांकन के पश्चात् 30 अंकों में से 40 परिवर्तित करने के उपरांत ग्रेड का निर्धारण किया जाएगा।

हिन्दी पाठ्यक्रम-अ कोड संख्या (002)

कक्षा नौवीं हिन्दी 'अ'-संकलित परीक्षाओं हेतु पाठ्यक्रम विनिर्देशन 2014-2015

संकलित परीक्षा 1 (भार 30%) (अप्रैल-सितम्बर) तथा संकलित परीक्षा 2 (भार 30%) (अक्टूबर से मार्च) हेतु भार विभाजन

	विषय-वस्तु	**उप भार**	**कुल भार**
1.	पठन कौशल गद्यांश व काव्यांश पर शीर्षक का चुनाव, विषय-वस्तु का बोध, भाषिक बिन्दु/संरचना आदि पर बहुविकल्पी प्रश्न		20
(अ)	दो अपठित गद्यांश (100 से 150 शब्दों के)	10	
(ब)	दो अपठित काव्यांश (100 से 150 शब्दों के)	10	
2.	व्याकरण के लिए निर्धारित विषयों पर विषय-वस्तु का बोध, भाषिक बिन्दु/संरचना आदि पर प्रश्न	15	15
3.	पाठ्यपुस्तक क्षितिज भाग-1 व पुरक पाठ्यपुस्तक कृतिका भाग-1		35
(अ)	**गद्य खण्ड**	15	
1.	क्षितिज से निर्धारित पाठों में से गद्यांश के आधार पर विषय-वस्तु का बोध, भाषिक बिन्दु/संरचना आदि पर प्रश्न ।	05	
2.	क्षितिज से निर्धारित गद्य पाठों के आधार पर विद्यार्थियों की उच्च चिन्तन व मनन क्षमताओं का आकलन करने हेतु प्रश्न ।	10	
(ब)	काव्य खण्ड	15	
1.	काव्यबोध व काव्य पर स्वयं की सोच की परख करने हेतु क्षितिज से निर्धारित कविताओं में से काव्यांश के आधार पर प्रश्न ।	05	
2.	क्षितिज से निर्धारित कविताओं के आधार पर विद्यार्थियों का काव्यबोध परखने हेतु प्रश्न ।		
(स)	**पूरक पाठ्यपुस्तक कृतिका भाग-1**	05	
	पूरक पुस्तिक 'कृतिका' के निर्धारित पाठों पर आधारित एक मूल्य परक प्रश्न पूछा जाएगा । इस प्रश्न का कुल भार पाँच अंक होगा । ये प्रश्न विद्यार्थियों के पाठ पर आधारित मूल्यों के प्रति उनकी संवदेनशीलता को परखने के लिए होगा ।		
4.	**लेखन**		20
(अ)	विभिन्न विषयों और संदर्भों पर विद्यार्थियों के तर्कसंगत विचार प्रकट करने की क्षमता को परखने के लिए संकेत बिन्दुओं पर आधारित समसामयिक एवं व्यावहारिक जीवन से जुडे हुए विषयों पर 200 से 250 शब्दों में किसी एक विषय पर निबन्ध ।	10	

विषय-सूची

विषय		पृष्ठ सं०
1. पाठ्य क्रम	–	4-8
2. अपठित गद्यांश	–	9-13
3. अपठित काव्यांश	–	14-28
4. व्याकरण	–	29-43
5. पाठ्य पुस्तक (क्षितिज भाग-I)	–	44-65
6. पाठ्य पुस्तक (कृतिका भाग-I)	–	66-68
7. रचना (पत्र-लेखन, निबंध लेखन एवं प्रतिवेदन)	–	69-78

PREFACE

Kendriya Vidyalaya Sangathan is a pioneer organization. which caters to the all round development of the students. Time to time various strategies have been adopted to adorn the students with academic excellence.

This support material is one such effort by Kendriya Vidyalaya Sangathan, an empirical endeavor to help students learn more effectively and efficiently. It is designed to give proper platform to students for better practice and understanding of the chapters. This can suitably be used during revision. Ample opportunity has been provided to students through master cards and question banks to expose them to the CBSE pattern. It is also suggested to students to keep in consideration the time-management aspect as well.

I extend my heartiest gratitude to the Kendriya Vidyalay. Sangathan authorities for providing the support material to the students prepared by various Regions. The same has been reviewed by the Regional Subject Committee of Patna Region who have worked arduously to bring out the best for the students. I also convey my regards to the staff of Regional Office, Patna for their geniune cooperation.

In the end, earnestly hope that this material will not only improve the academic result of the students but also inculcate learning habit in them.

M. S. Chauhan

Deputy Commissioner

KENDRIYA VIDYALAYA
SANGATHAN
Patna Region

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

STUDY MATERIAL
2014-15
SA-1

CLASS IX
HINDI